इकाई 2 प्रागैतिहासिक काल*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पारिभाषिकी

2.3 प्राक्-इतिहास का जन्म

2.4 भारत की भौगोलिक विशेषताएँ

2.5 भारतीय पुरापाषाण काल के चरण एवं काल निर्धारण

2.6 पुरापाषाण काल के पुरातात्विक साक्ष्य

2.7 भारत में निम्न पुरापाषाण काल

2.8 मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृतियाँ

2.9 उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृतियाँ

2.10 मध्य पाषाण कालीन संस्कृति

2.11 सारांश

2.12 शब्दावली

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.14 संदर्भ ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप निम्नांकित विषयों के बारे में सीखेंगे :

- भारत में प्राक्-इतिहास का जन्म;
- पुरापाषाण और मध्यपाषाण कालीन संस्कृतियों को कैसे परिभाषित किया जाता है;
- उपकरणों के वर्गीकरण एवं प्रोद्यौगिकी के पुनर्निर्माण हेतु उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्य;
- स्थल और उनकी स्थानीय/क्षेत्रीय संरचना;
- प्रागैतिहासिक आदिमानवों/खानाबदोशों के अध्ययन के विभिन्न तरीके; और
- भारतीय पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल की प्रमुख विशेषताएँ।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम मनुष्य के जैविक और सांस्कृतिक विकास के इतिहास के प्रारंभिक चरण के बारे में जानेंगे। यह वह समय है जब वर्तमान मनुष्य के पैतृक कहे जाने वाले प्राणी अपने वानर समान संबंधियों से अलग होना शुरू हो गए थे। यह 25 लाख वर्षों की यात्रा को दर्शाता है। इसी क्रम में जैविक संरचना, जैसे कि दो पैरों पर चलने एवं मस्तिष्क की वृद्धि जैसे पहुलओं में सुधार हुए। सांस्कृतिक जीवन में पत्थर एवं लकड़ी जैसे प्राकृतिक पदार्थों से उपकरणों का जीवनोपयोगी निर्माण एक महत्वपूर्ण कारक था।

* यह इकाई एम.ए.एन.-002, खंड-5 और 6 से ली गई है।

इस इकाई में हम पुरापाषाण और मध्यपाषाण संस्कृतियों, उपकरणों के वर्गीकरण तथा तकनीकी पहलुओं के पुनर्निर्माण हेतु उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्यों, इन संस्कृतियों के विभिन्न स्थलों, उनकी क्षेत्रीय प्रतिस्थिति (setting) एवं मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

2.2 पारिभाषिकी

पुरातत्व की वह शाखा जो मानव इतिहास के प्रारंभिक चरण के अध्ययन से संबंधित है प्राक्-इतिहास (Prehistory) कहलाती है। दूसरे शब्दों में, प्राक्-इतिहास लेखन प्रणालियों के आविष्कार से पहले के मानव समाजों की उत्पति और वृद्धि से संबंधित है। इसके बाद आद्य-इतिहास (Protohistory) आता है जो प्राक्-इतिहास एवं इतिहास के बीच का संक्रमण काल है। आद्य-इतिहास का समय सामान्य युग से पूर्व तीसरी और दूसरी सहस्त्राब्दि तथा पहली सहस्त्राब्दि का शुरुआती अर्धकाल माना गया है। यह अनेक प्रारंभिक नवपाषाण-ताम्रयुगीन समुदायों के विकास को दर्शाता है जिसकी विशेषता व्यवस्थित ग्राम्य जीवन; मवेशी और भेड़-बकरी जैसे जानवरों का पालन; गेहूँ, जौ, चावल और बाजरा जैसी फसलों की खेती के साथ-साथ विभिन्न कलाओं एवं शिल्पों का उद्‌भव है। सिंधु घाटी में इसी चरण के दौरान शहरी योजना और कांस्य तकनीक के आधार पर एक नगरीय सभ्यता का विकास हुआ। कृषि जीवन से पहले शिकार और संग्रहण की सहायता से जीवन यापन की एक लम्बी अवधि है। यही प्राक्-इतिहास की विषय-वस्तु है।

मानव अतीत या इतिहास तीन प्रमुख कालों में विभाजित है, जिनके नाम हैं :

1) पाषाण युग,

2) कांस्य युग, और

3) लौह युग।

ये केवल तकनीकी क्रम नहीं हैं। इनका अर्थ केवल यह नहीं है कि पाषाण युग में पत्थरों, कांस्य युग में कांसे एवं लौह युग में लोहे के उपकरणों एवं औज़ारों का निर्माण किया गया था। इन युगों का महत्व तकनीकी विकास से कहीं अधिक है। ये आवश्यकता-आधारित अर्थव्यवस्था (subsistence economy) या भोजन प्राप्त करने के तरीकों एवं सामाजिक संगठन के विभिन्न स्वरूपों, जैसे निर्बल, बीमार एवं वृद्धों की देखभाल एवं मृतकों के निपटान की विधि, कला एवं जीवन के अन्य पहलुओं इत्यादि को दर्शाते हैं।

पाषाण युग का विभाजन तीन कालों में किया गया है, जिनके नाम हैं :

1) पुरापाषाण काल,

2) मध्यपाषाण काल, और

3) नवपाषाण काल।

'Lithic' शब्द ग्रीक के '*Lithos*' से लिया गया है जिसका अर्थ पत्थर होता है। Palaeolithic का अर्थ पुरापाषाण, Mesolithic का अर्थ मध्यपाषाण और Neolithic का अर्थ नवपाषाण होता है।

2.3 प्राक्-इतिहास का जन्म

'प्राक्-इतिहास' का जन्म 1859 में हुआ जब उत्तरी यूरोप में लंदन की रॉयल सोसायटी के सामने विलुप्त प्रजाति वाले जंगली मवेशियों और अन्य बड़े स्तनधारियों की हड्डियों से बने प्राचीन पत्थर के औज़ारों के जीवाष्मों की पुष्टि हुई। इससे यह स्पष्ट हो गया कि उत्तरी

यूरोप में भौगोलिक परिदृश्य के अपने वर्तमान स्वरूप को ग्रहण करने से पहले भी मनुष्य रहते थे। यह लंबे मानव इतिहास की शैश्व्यवस्था का काल था। सर जॉन लुब्बौक ने अपनी पुस्तक *प्रीहिस्टौरिक टाइम्स* (1865) में Prehistory (प्राक्-इतिहास) नामक एक नए विज्ञान के जन्म की बात कही। उन्होंने पाषाण युग को पुरापाषाण युग और नवपाषाण युग में विभाजित किया। और 19वीं शताब्दी के अंत तक न केवल एक मध्यवर्ती चरण, जिसे मध्यपाषाण काल कहा जाता है, को पुरापाषाण और नवपाषाण युगों के बीच प्रस्तावित किया गया, बल्कि कांस्य और लौह युगों के भीतर भी कई चरणों को चिहिन्त किया गया। इसके अलावा, फ्रांस में गुफा एवं मैदानी स्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक अनुक्रम के आधार पर पुरापाषाण को तीन चरणों में विभाजन की बात कही गई : निम्न, मध्य और उच्च।

2.4 भारत की भौगोलिक विशेषताएँ

भारत (या सामान्य भौगोलिक और सांस्कृतिक उद्देश्यों के दृष्टिकोण से दक्षिण एशिया) उपमहाद्वीपीय स्तर पर एक अलग भौगोलिक इकाई है। भारतीय परिदृश्य शिकार-संग्रहण की सफल जीवन पद्धति की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति से परिपूर्ण हैः शिकारी-संग्रहकर्ता समूहों के स्वछंद संचलन के लिए उपयुक्त भू-भाग, उपकरण बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की मूल चट्टानों और सिलिकामय (siliceous) पत्थरों की उपलब्धता, बड़ी और छोटी धाराओं और झरनों के रूप में बारहमासी जल निकायों की मौजूदगी, और जंगली पौधों तथा पशु खाद्य पदार्थों की एक विशाल विविधता की उपलब्धता। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि समुचित हिमालयी प्रदेश एवं सिंधु-गंगा के जलोढ़ भूभाग को छोड़कर पाषाण युगीन मानव समूह पूरे भारतीय भू-भाग पर फैल गए।

2.5 भारतीय पुरापाषाण काल के चरण एवं काल निर्धारण

भारतीय पुरापाषाण विकास तीन चरणों में विभाजित है :

i) निम्न,

ii) मध्य, और

iii) उच्च।

निम्न पुरापाषाण युग की दो सांस्कृतिक परंपराएँ हैं :

i) सोहनियन (Soanian)[1], कंकड़ की उपकरण परंपरा, और

ii) भारतीय प्रायद्वीपीय कुल्हाड़ी-विदारक परंपरा।

इन परंपराओं में बड़े कंकड़ों या परतों (Flakes) से गँड़ासे और काटने के उपकरण, कुल्हाड़ियाँ, विदाकर (Cleavers), चाकू जैसे औज़ारों का निर्माण शामिल है। मध्य पुरापाषाण काल में खुरचनी, नोक (Point), छिद्रक (Borer) और अन्य उपकरणों का निर्माण विभिन्न प्रकार के शल्कों (Flakes) को मूल पत्थरों (Cores) से निकाल कर किया जाता था। आगे चलकर, उच्च पुरापाषाण काल में इन औज़ारों में और परिष्करण हुआ। अब, छेदक/छिद्रक (punch) तकनीक द्वारा बेलनाकार मूल पत्थरों से काटकर एक श्रृंखला में बनाए गए लंबे, समानांतर पक्षीय (parallel-sided) ब्लेडों पर बनाए जाने वाले औज़ारों, जैसे कि कुंद किए गए (blunted) और क़लमतराश (Penknife) ब्लेडों, दाँतेदार (serrated) किनारों वाले ब्लेडों और तीर अंकों (Arrow Points) आदि का निर्माण किया जाने लगा।

[1] इस शब्द का उद्भव सोन नदी के नाम से हुआ है।

सापेक्ष काल-निर्धारण के अलावा, हाल के वर्षों में कुछ स्थलों का 'रेडियोकार्बन', पुराचुम्बकत्व (Palaeomagnetism), ताप-संदीप्ति प्रणाली (Thermoluminiscence), 'पोटेशियम-आर्गन', 'आर्गन-आर्गन' और 'यूरेनियम-थोरियम' जैसी वैज्ञानिक पद्धतियों के माध्यम से सटीक और असंदिग्ध दिनांकन कर पाना पूर्णतः संभव हो गया है।

2.6 पुरापाषाण काल के पुरातात्विक साक्ष्य

पुरापाषाण काल के पुरातात्विक स्थल मुख्यतः दो प्रकार के हैं:

i) मैदानी स्थल/अनावृत स्थल, और

ii) शैलगुफाएँ (Rock-shelters)।

मैदानी स्थल भारत के सभी हिस्सों में पाए जाते हैं और बड़ी-छोटी नदियों पर या उनके पास तथा पहाड़ी इलाकों की आंतरिक घाटियों या गिरिपाद (foothill) क्षेत्रों में होते हैं। ये अपक्षीण/ऋतुक्षरित (weathered) आधार-शैल (bedrock) या फिर नरम गाद (silt) पर पाए गए वास्तविक स्वस्थानी (*insitu*) या अबाधित स्थलों से लेकर मिश्रोढक (Colluvium) और नदी-जनित बजरी (gravels) के रूप में होने वाली विभिन्न प्रकार की गठन प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। शैलगुफाएँ पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती हैं जो अवसादित/तलछटी (sedimentary) पत्थरों अथवा चट्टानों (बलुआ पत्थर एवं चूना पत्थर) से ढके होते हैं। मध्य प्रदेश में भीमबेटका परिसर और आंध्र प्रदेश में कर्नूल/कुरनल गुफाएँ प्रसिद्ध उदाहरण हैं।

2.7 भारत में निम्न पुरापाषाण काल

जैसा कि हम पहले भी देख चुके हैं, भारत में निम्न पुरापाषाण के चरणों में (मानचित्र 2.1) दो प्रमुख औज़ार निर्माण की सांस्कृतिक परंपराएं आती हैं जो निम्नांकित हैं:

अ) पूर्व और दक्षिणी-पूर्व एशियाई गँड़ासे-काटने के उपकरण बनाने की परंपरा के एक अंश के रूप में सोहनियन परंपरा, और

ब) 'पुरातन विश्व' (अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप, पश्चिमी और दक्षिण एशिया) के पश्चिमी भाग से व्यापक रूप से जानी गयी अशूलियन (Acheulian) परंपरा का गठन करते कुल्हाड़ियों-विदारकों या दोहरी सतह वाले (biface) उपकरणों के संग्रह।

> **''पुरातन विश्व (Old World)''** शब्द का प्रयोग पश्चिमी विश्व में अफ्रीका, यूरोप और एशिया (एफ्रो-यूरेशिया अथवा पूर्वी गोलार्ध) को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जिसे सामूहिक रूप से विश्व के उस हिस्से के रूप में माना जाता है जो अमरीका और ओशिनिया (Oceania) या ''नवीन विश्व (New World)'' या पश्चिमी गोलार्ध कहे जाने वाले हिस्से से संपर्क में आने से पहले था।
>
> स्रोतः **https://en.wikipedia.org/wiki/Old_World**

सोहनियन सांस्कृतिक परंपरा

इस परंपरा के अस्तित्व को भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में 1939 में केंब्रिज विश्वविद्यालय के टी. टी. पैटर्सन और येल विश्वविद्यालय के एच. डी. टैरा द्वारा पहचाना गया। अपने क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study) के आधार पर उन्होंने सोन नदी पर पाँच सोपानों (terraces) की एक श्रृंखला की पहचान की जो सिंधु जल निकासी प्रणाली का

हिस्सा थी। सोपान कश्मीर घाटी की हिमनदियों एवं अंतर-हिमनदियों से मिलते-जुलते हैं और स्तर विन्यास एवं वर्गीकरण के आधार पर इन्हें सोन संस्कृति अनुक्रम (culture sequence) का नाम दिया गया।

उपकरणों में अधिकांश एक या दोनों सतहों/बाह्य परतों के शल्कन (Flaking) द्वारा प्राप्त कंकड़ों (pebbles) के औज़ार हैं जिनकी दोनों छोरों/किनारों पर धार होती है (चित्र 2.1)। ये मुख्यतः गँड़ासों और काटने के औज़ारों के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

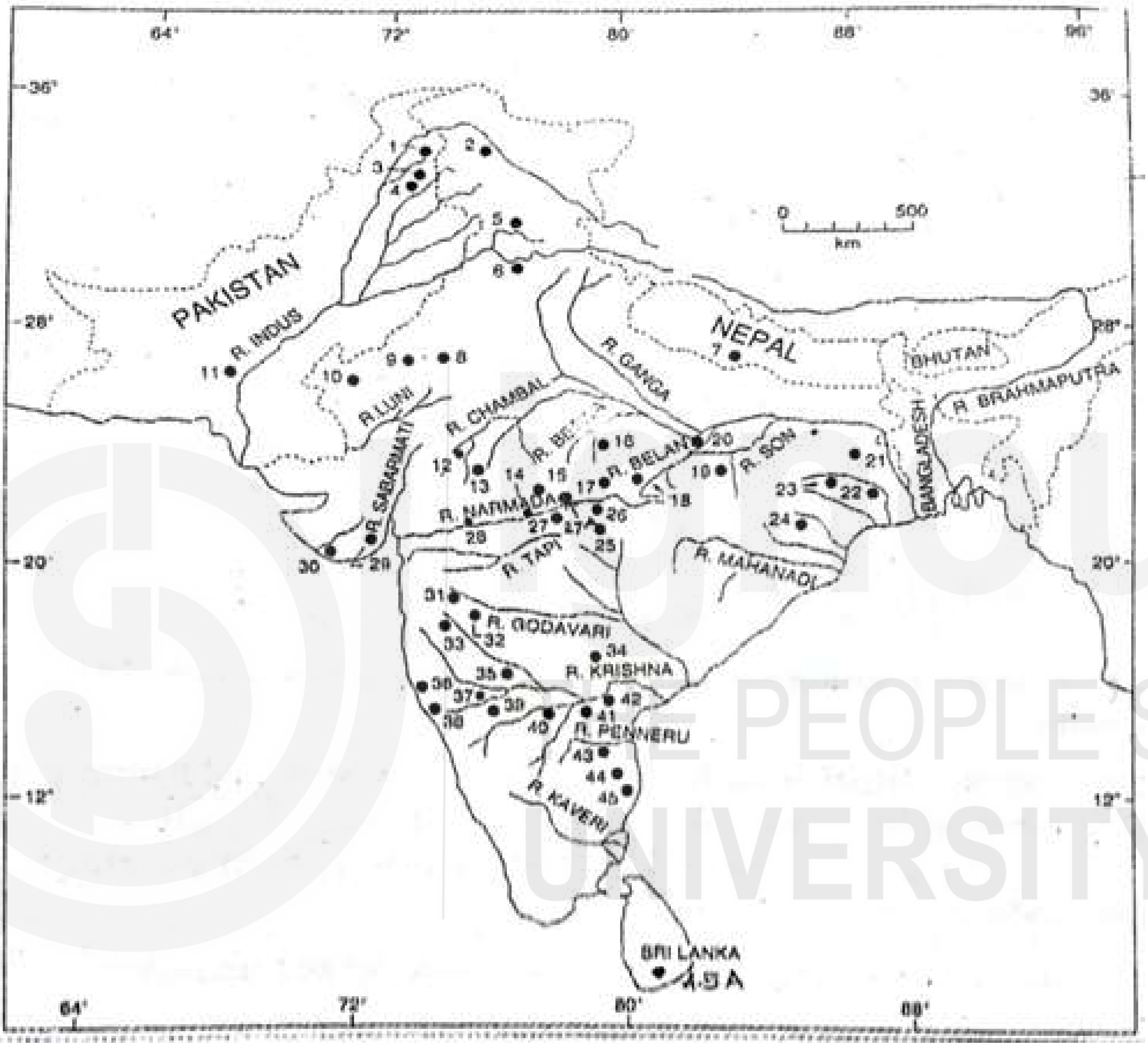

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

मानचित्र 2.1: भारत में महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण कालीन स्थल। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड 5। दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाणीय स्थल।

1) रिवात (Riwat); 2) पहलगाम; 3) जलालपुर; 4) दीना (Dina); 5) ब्यास-बाणगंगा परिसर; 6) सिरसा-घग्गर परिसर; 7) डंग-डियोखुरी (Dang-Deokhuri) परिसर; 8) डीडवाना; 9) जायल; 10) जैसलमेर-पोखरण मार्ग; 11) ज़िआरात पीर शाबान (Ziarat Pir Shaban); 12) बेराच (Berach) परिसर; 13) चंबल परिसर; 14) भीमबेटका; 15) रायसेन परिसर; 16) ललितपुर; 17) दमोह (Damoh) परिसर; 18) सोन परिसर; 19) सिहावल; 20) बेलन परिसर; 21) सुसुनिया (Sisunia); 22) सिंहभूम; 23) पैसरा (Paisra); 24) ब्राह्मणी (Brahmani) परिसर; 25) वैनगंगा परिसर; 26) महादेव (Mahadeo) पिपरिया; 27) आदमगढ़; 27) हथनोरा; 28) दुरकड़ी (Durkadi); 29) समाधियल (Samadhiala); 30) उमरेठी; 31) गंगापुर; 32) चिरकी-नेवासा; 33) बोरी (Bori); 34) नालगोंडा; 35) हुंस्गी (Hunsgi) और बैचबल (Baichbal) घाटी परिसर; 36) महाड; 37) अनगवाड़ी (Anagwadi); 38) मालवन/मालवण; 39) लखमापुर (Lakhmapur); 40) नित्तूर (Nittur); 41) कर्नूल परिसर; 42) नागार्जुनकोंडा परिसर; 43) कुड्डापाह (Cuddapah) परिसर; 44) रल्लकलवा (Rallakalava); 45) कोर्टाल्लयर (Kortallayar) परिसर; 45) रत्नापुरा (Ratnapura) परिसर।

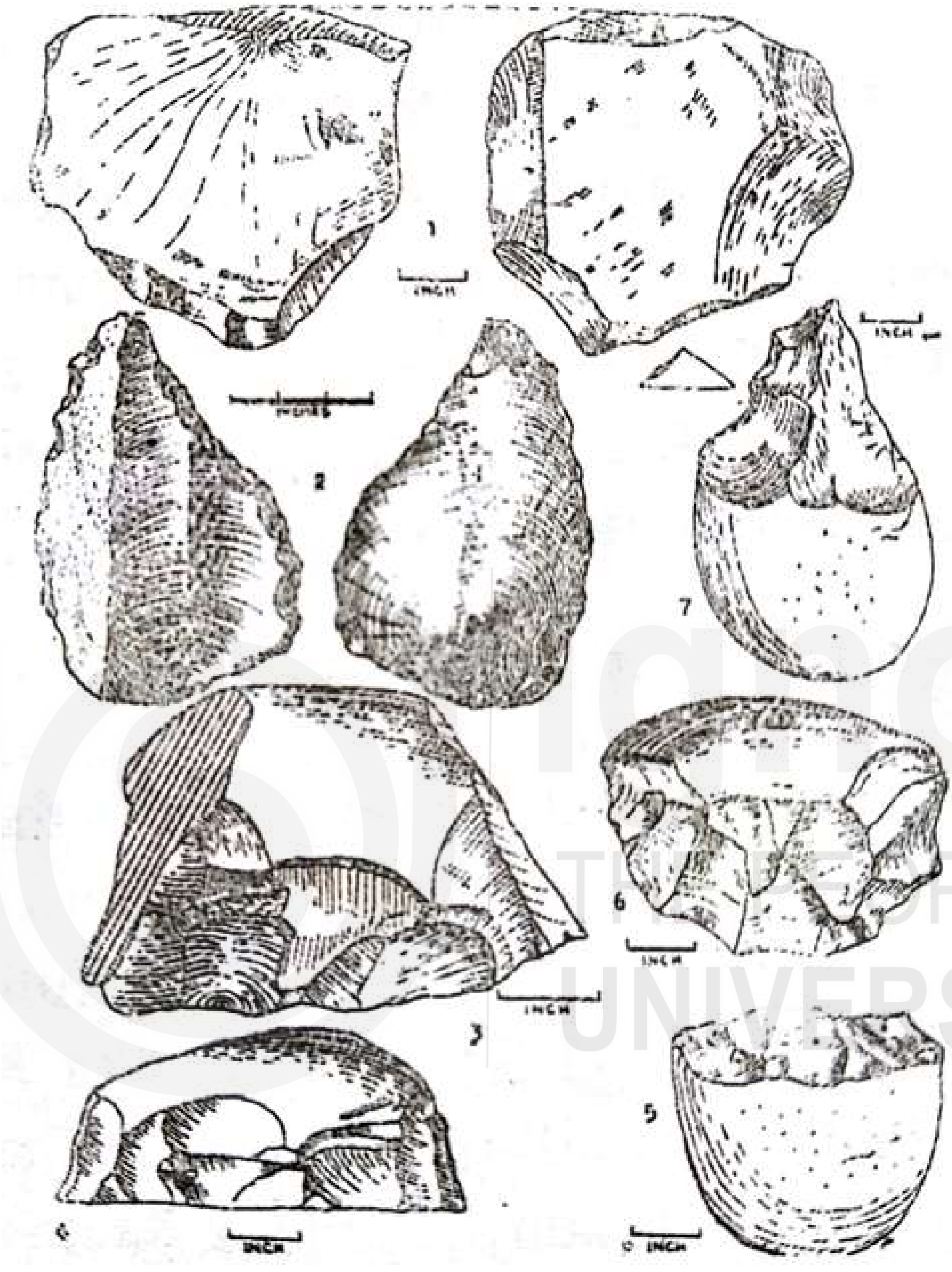

चित्र 2.1: प्रारंभिक सोन परंपरा के धारदार और चपटे औज़ार। स्रोतः एम.ए.एन.-002, खंड 5, इकाई 1।

रॉबिन डनल, जिन्होंने 1980 के दशक में इस क्षेत्र (जो अब पाकिस्तान में है) में कार्य किया, ने टैरा और पैटर्सन द्वारा प्रस्तुत पुराकालीन मौसम/जलवायु की व्याख्या और सांस्कृतिक अनुक्रम पर सवाल उठाया। लेकिन भारतीय प्राक्-इतिहास में ''सोन संस्कृति'' एक महत्वपूर्ण बिंदु है। सीमा के भारतीय भाग से कंकड़ के बने उपकरणों के जमावड़े हरियाणा में सिरसा और घग्गर की घाटियों में, हिमाचल प्रदेश की ब्यास और बाणगंगा घाटियों में और शिवालिक पर्वतों की अग्र श्रृंखला पर बसे होशियारपुर-चंडीगढ़ वृत्त-खंड में पाए गए (चित्र 2.2)।

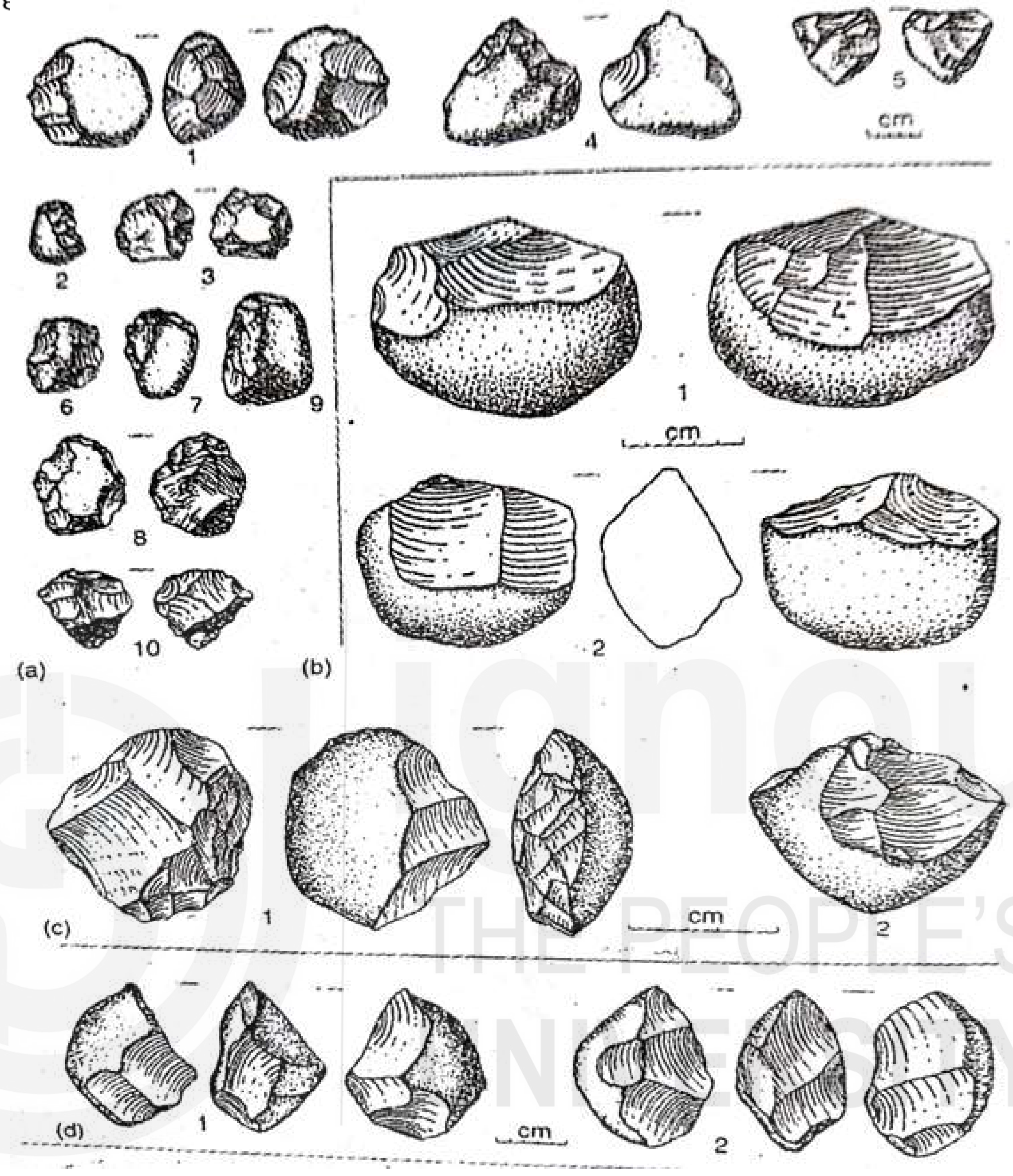

चित्र 2.2: भारत में निम्न पुरापाषाण काल के कंकड़ से बने उपकरण : अ) नित्तूर (Nittur), कर्नाटक; ब) जैसलमेर-पोखरण मार्ग, राजस्थान; स) सिरसा घाटी, हरियाणा; द) महादेव (Mahadeo) पिपरिया, मध्य प्रदेश। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड 5, इकाई 1।

पंजाब की सोन संस्कृति से संबंधित जमावड़ों को कुछ पुरातत्वविदों/विद्वानों द्वारा मध्य पुरापाषाण परंपरा का बताया गया है।

अशूलियन (Acheulian) सांस्कृतिक परंपरा

'अशूलियन' शब्द का प्रयोग कुल्हाड़ियों तथा विदारकों के रूप में उन्नत और तेजी से बढ़ते सममित/सममितीय (symmetrical) आकारों को दर्शाते औज़ारों के जमावड़ों के लिए किया जाता है। उपकरण बनाने के लिए क्वार्टजाइट (Quartzite) को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता था। प्राकृतिक रूप से जहाँ इसकी उपलब्धता नहीं थी, अशूलियन मानव समूह अन्य उपलब्ध पत्थरों का प्रयोग करते थे जैसे भीमा घाटी में चूना पत्थर, महाराष्ट्र में डोलराइट (Dolerite) एवं असिताष्म (Basalt), और बिहार एवं बंगाल में शीलीभूत लकड़ी (Fossil Wood)। पत्थर के हथौड़े, नरम हथौड़े और उद्यत आन्तरक (prepared core)

तकनीकों के माध्यम से परतों/टुकड़ों को अलग करके उन्हें औज़ारों का रूप दिया जाता था।

पत्थर के उपकरण प्रमुख साक्ष्य हैं जिनके माध्यम से प्रागैतिहासिक लोगों के रहन-सहन को समझा जा सकता है। पुरातत्वविद इन पत्थर के उपकरणों को परिभाषित करने के लिए निश्चित शब्दावली का प्रयोग करते हैं। यदि किसी बड़े पत्थर को जानबूझकर एक या अधिक भागों में तोड़ा जाता है, सबसे बड़े हिस्से को मूल पत्थर (Core) और इससे बने उपकरण को मूल पाषाण उपकरण (core tool) कहा जाता है। मूल चट्टान से तोड़कर अलग किए गए छोटे टुकड़ों को परत (Flakes) और इससे बने उपकरणों को परत उपकरण (flake tools) कहा जाता है।

समय के विभिन्न चरण

भारत में निम्न पुरापाषाण काल : 600,000 वर्ष बी.पी. (Before Present) से 150,000 वर्ष बी.पी.

भारत में मध्य पुरापाषाण काल : 165,000 वर्ष बी.पी. से 31,000 वर्ष बी.पी.

भारत में उच्च पुरापाषाण काल : 40,000 वर्ष बी.पी. से 12,000 वर्ष बी.पी.

निम्न पुरापाषाण काल के महत्वपूर्ण स्थलः

1) पश्चिमी राजस्थान के सिंगितलव (SingiTalav) में कुल्हाड़ियों/गँड़ासों, बहुफलकों (Polyhedrons), दोहरी सतह वाले उपकरणों (Bifaces), खुरचनियों एवं नुकीले औज़ारों (Points) का एक जमावड़ा मिला है।

2) मध्य प्रदेश में भीमबेटका की शैलगुफा संख्या III एफ-23 ने अशूलियन, मध्य पुरापाषाणीय तथा उच्च पुरापाषाणीय स्तरों को दर्शाया है।

3) मध्य प्रदेश के आदमगढ़ ने मध्य पुरापाषाणीय भंडार के नीचे एक अशूलियन स्तर का खुलासा किया है।

4) उत्तर प्रदेश में ललितपुर (झाँसी जिला) में ग्रेनाइट निर्मित उपकरणों का एक प्रारंभिक और प्राचीन स्वस्थान (*In situ*) जमावड़ा प्राप्त हुआ है।

5) बिहार के मुंगेर जिले के पैसरा में एक प्रारंभिक अशूलियन जमावड़ा मिला है। खुदाई में गड्ढों (post-holes) के संरक्षणों (alignments) व पाषाण खंडों (stone blocks) की गोलाकार व्यवस्था के रूप में झोपड़ीनुमा आवासीय संरचनाएं उद्धारित हुई हैं।

6) महाराष्ट्र के चिरकी-नेवासा में डोलराइट पुरावशेषों के साथ-साथ जंगली मवेशियों एवं अन्य पशुओं की हड्डियों के जीवाष्म मिले हैं। यह स्थल मौसम के अनुसार बना हुआ एक शिविर था जिसका इस्तेमाल विभिन्न उद्देश्यों के लिए होता था। इन पुरावशेषों में कुल्हाड़ियों, खुरचनियों और चाकुओं के साथ-साथ बिल्लौर और सिक्थ स्फटिक (Chalcedony) से बने छोटे-छोटे परतदार उपकरणों (flake tools) का भंडार भी शामिल है।

7) भीमा जलप्रवाह घाटी में दक्कन असिताष्म भूदृश्य (Deccan Basalt Landscape) के एक स्थल मोरगाँव (Morgaon) से विदारकों और कुल्हाड़ियों समेत 162 नमूने मिले हैं।

8) उत्तरी कर्नाटक में हुंस्गी (Hunsgi) घाटी में हुंस्गी तथा बैचबल (Baichbal) घाटी में येदियापुर से स्वस्थान सांस्कृतिक चरणों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ कई पुरावशेष प्राप्त हुए हैं।

9. उत्तरी कर्नाटक में हुंस्गी घाटी में स्थित इसमपुर (Isampur) एक खदान-सह-शिविर स्थल है। यहाँ मूल पत्थरों (Cores), अधूरे शल्कों/फलकों (Flake Blanks), पूर्णतः निर्मित औज़ारों एवं चूना पत्थर के अपशिष्ट उत्पाद मिले हैं (चित्र 2.3 और 2.4)। हिरन एवं कछुए के खोल के अवशेष भी मिले हैं। इसमपुर ने हुंग्सी घाटी के इस हिस्से में एक स्थानीयकृत केन्द्र के रूप में कार्य किया, जहाँ से आदि मानव (Hominins) अपनी दैनिक संगृहण प्रक्रिया के लिए आसपास के चूना पत्थर के पठारों और घाटी के तलों में भ्रमण करते थे।

10) तमिलनाडु के एक स्वस्थान अशूलियन स्थल अत्तिरम्पक्कम से अबरक (Quartzite) और जंगली मवेशियों एवं अन्य प्रजातियों की हड्डियों के जीवाष्म अशूलियन जमावड़े मिले हैं। एक विकसित वैज्ञानिक तकनीक के माध्यम से हाल ही में इस स्थल का काल 15 लाख वर्ष बी.पी. निर्धारित किया गया है।

चित्र 2.3: कर्नाटक के इसमपुर में पूरातात्विक गर्त I में अशूलियन स्तर की खोज। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड 5, इकाई 1।

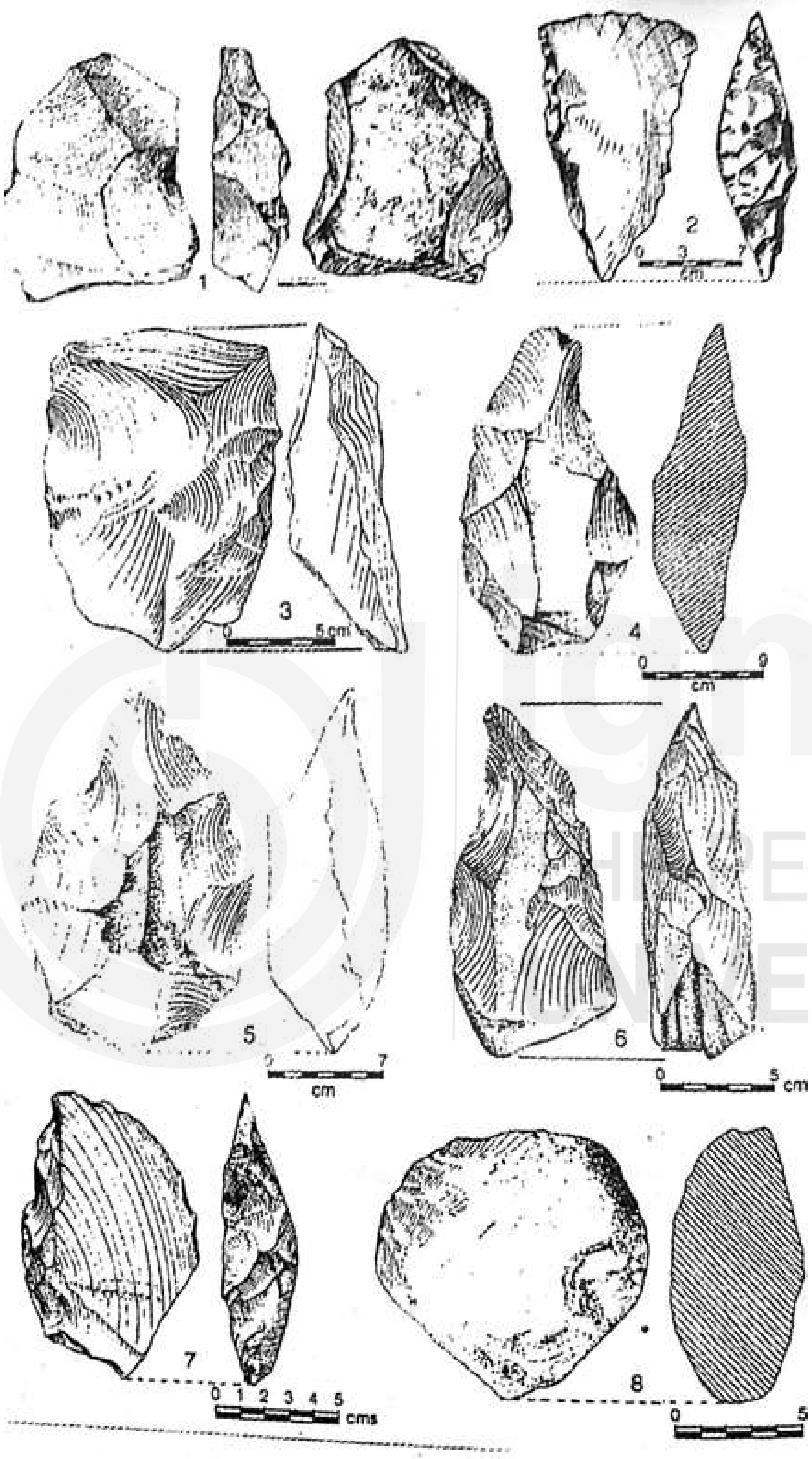

चित्र 2.4: इसमपुर, कर्नाटक से प्राप्त निम्न अशूलियन पुरावशेष 1.) मूल पत्थर (**Cores**); 2) और 3) विदारक; 4) और 5) कुल्हाड़ियाँ; 6) छेदक (**Perforators**); 7) चाकू; 8) हथौड़े। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-1।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

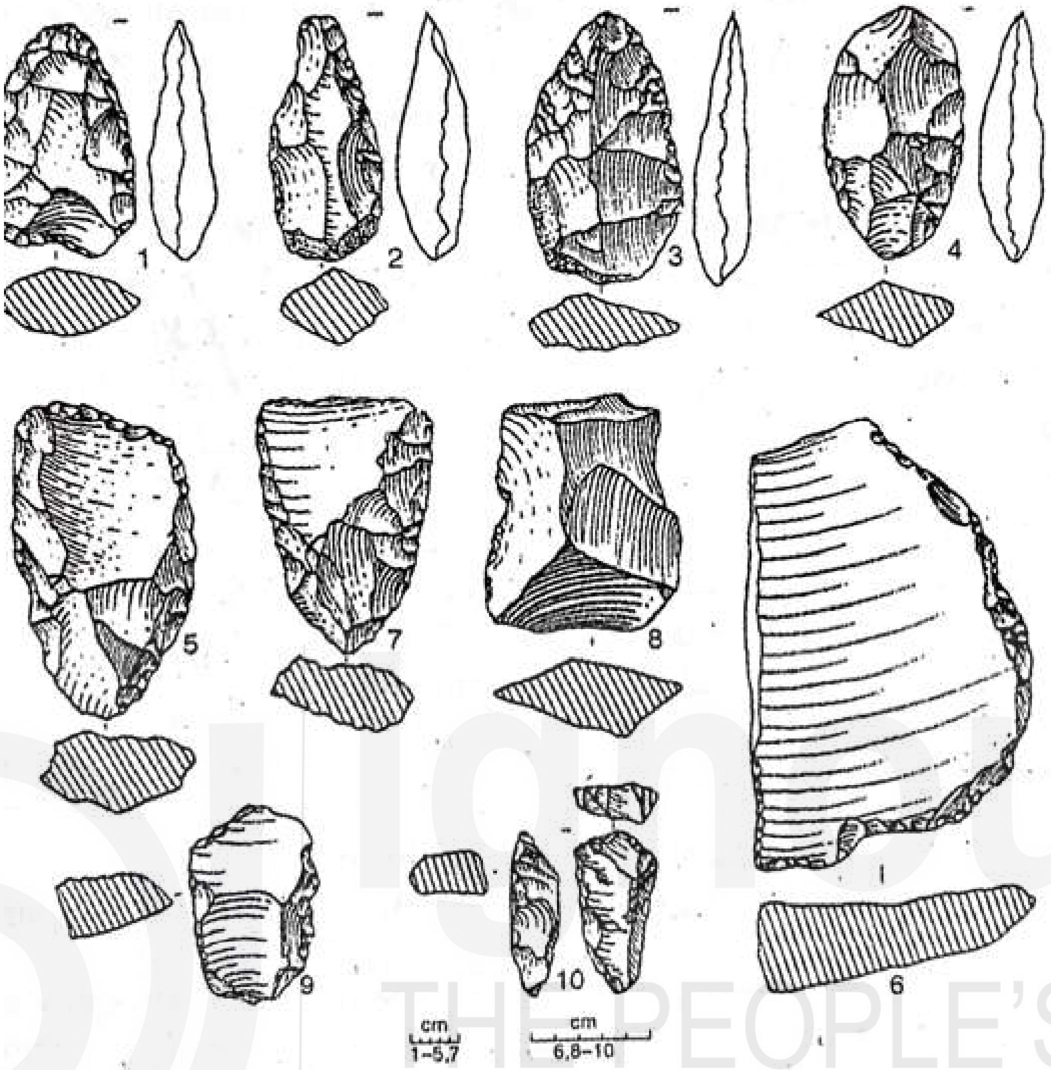

चित्र 2.5: भीमबेटका, मध्य प्रदेश के शैलाश्रय-III एफ-23 से प्राप्त विकसित अशूलियन पुरावशेष। स्रोतः एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-1. 1 से 4) कुल्हाड़ियाँ; 5 और 7) विदारक; 6) उत्तलनुमा (Convex) खुरचनी; 8) ताखदार (Notched) उपकरण; 9) दांतेदार औज़ार/दंतुर (Denticulate); 10) फल खुरचनियाँ (End-Scrapers)।

2.8 मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृतियाँ

मध्य पुरापाषाण संस्कृति निम्न पुरापाषाण संस्कृति के बाद का चरण है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, निम्न पुरापाषाण कालीन संस्कृति की विशेषता हस्त-कुल्हाड़ियों (Hand-axes) और विदारकों जैसे वज़नदार हथियार हैं। दूसरी ओर, मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृति को विशिष्ट तकनीकों से निर्मित फलकों/शल्कों (Flakes) पर बनाए गए विविध प्रकार के औज़ारों से जाना जाता है। इसलिए, इसे व्यापक स्तर पर शल्क उपकरण (flake tool) उद्योग भी कहा जाता है। यूरोप, दक्षिण-पश्चिमी एशिया और अफ्रीका की मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृति को मुस्टेरियन (Mousterian) संस्कृति भी कहा जाता है, जिसे फ्रांस में ल मूस्तिये (Le Mostier) नामक शैलाश्रय के नाम पर रखा गया है। मुस्टेरियन संस्कृति से जुड़ी मानव प्रजाति विलुप्त हो चुकी *होमो निएंडरथेलेंसिस* (*Homo Neanderthalensis*) थी। इस प्रजाति का लोकप्रिय नाम निएंडरथल (Neanderthal) मानव है। वह उच्च प्रातिनूतन (Upper Pleistocene) युग में रहता था।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

हस्त-कुल्हाड़ी (Hand-axe): सामान्यतः यह मूल पत्थर से बना एक उपकरण है। यह एक दोहरी सतह का औज़ार है क्योंकि इसके दोनों किनारों को तराशा जाता है। मौटे तौर पर यह त्रिकोणीय आकार का होता है, जो एक तरफ़ से चौड़ा और दूसरी तरफ़ से नुकीला होता है। यह पीछे की तरफ़ से हाथ में लेकर उपयोग किया जाता है। इसे कभी-कभी हत्थों (Handles) के रूप में ताड़वृंत (haft) किया जाता है।

विदारक (Cleaver) : एक सपाट उपकरण है जो एक चौड़े आयताकार या त्रिकोणीय शल्क (Flake) पर बना होता है। इसके एक सिरे पर एक चौड़ी, काटने वाली सीधी धार होती है।

गंड़ासा (Chopper) : एकल सतह वाला बड़ा उपकरण जिसके सिर्फ एक किनारे को घिसकर तैयार किया जाता है।

काटने का उपकरण (Chopping tool) : एक मूल पत्थर या एक कंकड़ पर बना एक औज़ार जिसकी दोनों सतहों को एक लहराती धार बनाने के उददे्श्य से बारी-बारी से तराशा जाता है।

स्रोत : एच. डी. सांकलिया (1964) 1982 पृ. सं. 45-58

मुस्टेरियन उद्योग

मुस्टेरियन उद्योग यूरोप, दक्षिण-पश्चिमी एशिया और अफ्रीका में निएंडरथल प्रजाति द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरण बनाने की एक मध्य पुरापाषाण युगीन परंपरा है। पत्थर के उपकरण बनाने वाले उद्योग की व्यापकता, जिसमें पूर्ववर्ती सांस्कृतिक चरण की हस्त-कुल्हाड़ियों और विदारकों के विपरीत मुख्य रूप से फलक (Flakes) बनाए और प्रयुक्त किए जाते थे, की शुरुआत मध्य प्रातिनूतन (Pleistocene) युग के अंत के आसपास मानी गई है। फलकों का निर्माण शिकार करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले विकसित उपकरणों के रूप में तकनीकी परिवर्तन का सूचक है। इस नई तकनीक में, पहले से तैयार एक मूल पत्थर (Core) से एक झटके में बनाए गए एक संपूर्ण औज़ार का निर्माण किया जाता था जिसके दौरान यह सुनिश्चित किया जाता था कि अलग किए गए शल्कों (Flakes) को विशिष्ट आकार/स्वरूप दिया जा सके। इतना ही नहीं, अलग किये गये शल्कों/पत्तरों को अनेक उपकरणों में ढाला जा सकता था। विभिन्न कार्यों के लिए अनेक प्रकार के उपकरण बनाना आसान हो गया था।

भारत में मध्य पुरापाषाण काल

भारत में मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृति के चरण की विशेषता को परतदार उपकरण उद्योग द्वारा चित्रित किया जाता है। 1956 में एच. डी. सांकलिया ने पहली बार इन परतदार उपकरणों का उल्लेख किया एवं प्रदर्शित किया जो पहले प्रवर (नेवासा, महाराष्ट्र) में और बाद में उत्तरी कर्नाटक की गोदावरी घाटी में पाया जाता है। उन्होंने इस उद्योग को नेवासियन (मुस्टेरियन की तरह) कहा। शीघ्र ही, उनके उत्तरवर्ती शोध से ज्ञात होता है कि नेवासियन कोई स्थानीय घटना नहीं थी बल्कि भारतीय पाषाण युगीन संस्कृति की सामान्य विशेषता थी। शुरुआत में, भारतीय प्राक्-इतिहास के इस काल के लिए मध्य पाषाण युग शब्द का प्रयोग किया गया। बाद में, मध्य पुरापाषाण को स्वीकार कर लिया गया।

मध्य पुरापाषाण उपकरण पत्तरों से बनाए जाते थे और पत्तरों की धार पत्तर के मूल पत्थर, गोलाकार और विशेष लेवालोय (Levallois) तकनीक से तैयार की जाती थी। कुछ क्षेत्रों में, उत्तरवर्ती अशूलियन पाषाण परंपरा में दो धारी पत्तरों की तीक्ष्णता में निरंतरता है, और ऐसा ही छोटी हस्त-कुल्हाड़ियों, विदारकों एवं अन्य उपकरणों में

दिखाई देती है। अनेक इलाकों में, कच्ची सामग्री के रूप में अबरक जैसे दानेदार पत्थरों के बदले बिल्लौर, सूर्यकांत मणि, सिक्थ स्फटिक, गोमेद इत्यादि मज़बूत पत्थरों का उपयोग मिलता है।

भारतीय मध्य पुरापाषाण काल के विभिन्न उपकरण विभिन्न प्रकार की खुरचनियाँ हैंः एक तरफा, दो तरफा, सतहनुमा, सीधी, टेढ़ी, अवतल, उत्तल, अवतल-उत्तल, नोकदार और मूल-पत्थर खुरचनी, सुतारी, एक तरफ़ धार वाली, दोनों तरफ़ नोक वाली, लेवालोय (Levallois) नोक वाली घुमावदार और चौड़ी, लघु हस्त-कुल्हाड़ियाँ एवं विदारक, और उपयोग किए जा चुके फलक। अहरन/सन्दान (Anvils) और हथौड़े भी निर्माण स्थल पर पाए गए हैं (चित्र 2.6)।

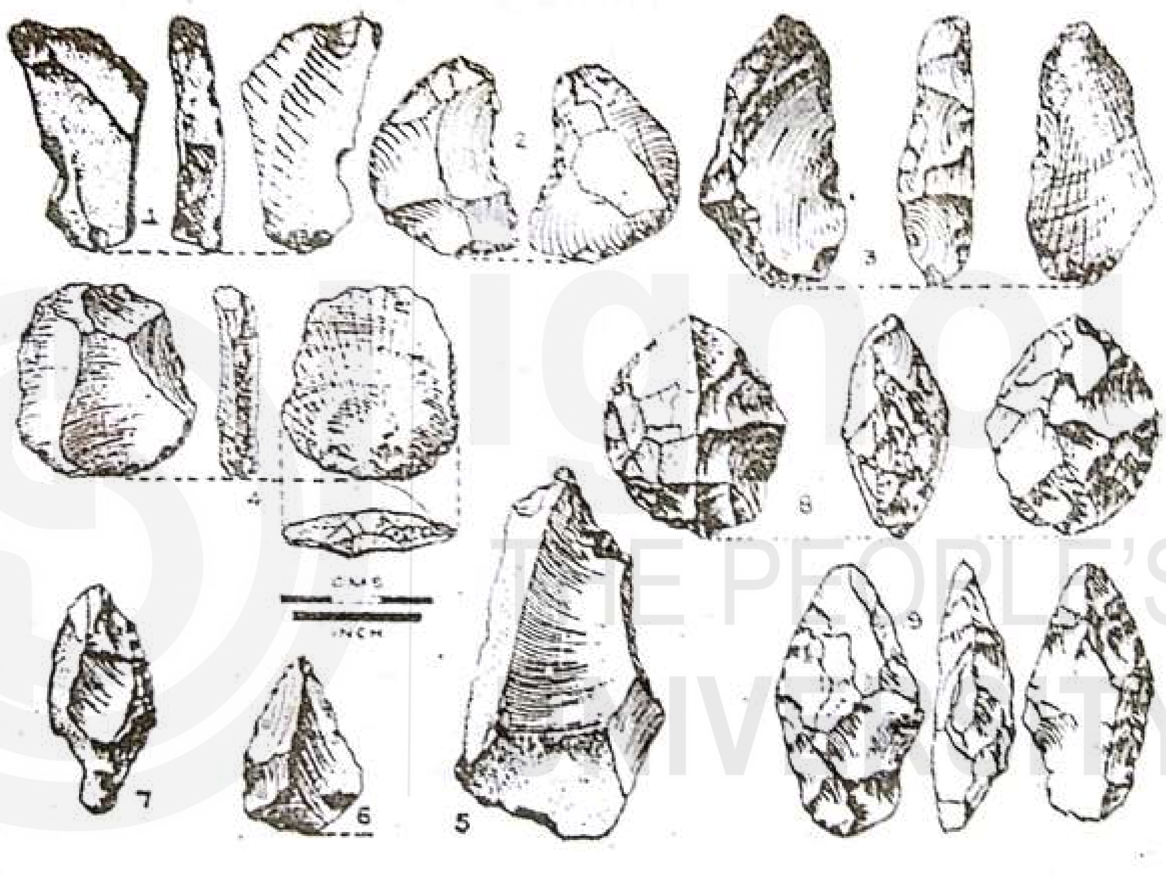

चित्र 2.6ः मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-2।

उपकरणों के निर्माण के लिए जिन तकनीक का उपयोग किया गया वे हैं : हथौड़ा, बेलनाकार हथौड़ा और लेवालोय (Levallois)। कच्ची सामग्री के रूप में जिन पत्थरों का उपयोग किया गया वे दानेदार अबरक से लेकर बिल्लौर, सूर्यकांत मणि और सिक्थ स्फटिक हैं।

लेवालोय तकनीक : पेरिस के एक उपनगर लेवालोय के नाम पर इस तकनीक का नाम रखा गया, जहाँ से एक खास प्रकार का मूल पत्थर तैयार किया जाता था। यह तकनीक 'कछुए के आकार वाले मूल पत्थर' से निर्मित एक नए उपकरण का उत्पादन करती थी जिस पर एक बार चोट करने पर परतें झड़ जाती थी। इसे 'मूल पत्थर को तैयार करने वाली तकनीक' (Prepared Core technique) भी कहा जाता है।

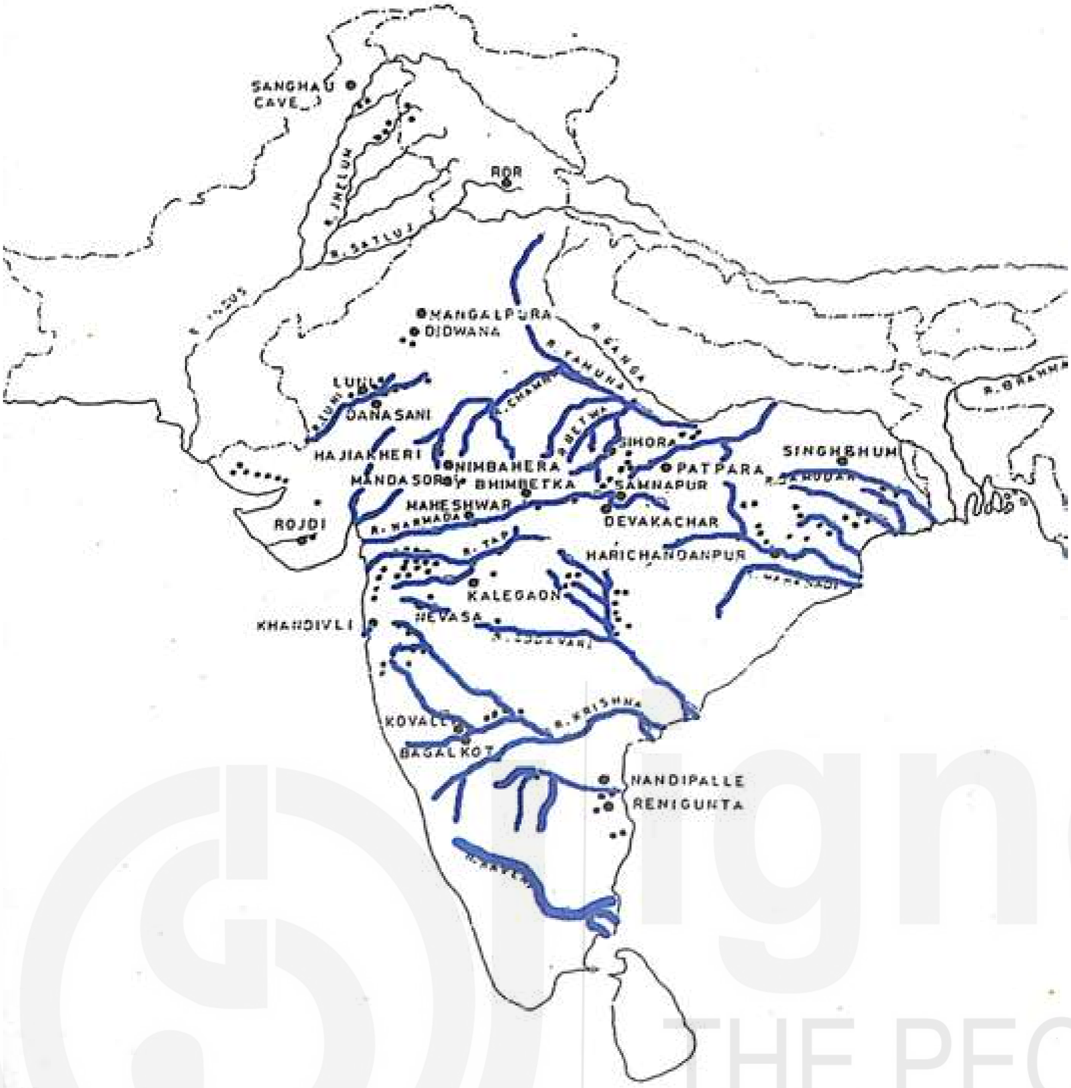

मानचित्र 2.2: भारतीय मध्य पुरापाषाण काल के स्थल (वी. एन. मिश्रा, 1989)। स्रोत : एम.एच. आई.-08, खंड-2, इकाई-5।

मध्य पुरापाषाण कालीन स्थल

भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश भाग में मध्य पुरापाषाण काल के स्थल मिलते हैं। मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण नदियों द्वारा निर्मित पथरीले जमावड़ों के रूप में मिलते हैं जो हमें वहाँ की जलवायु की अवस्था के बारे में बताते हैं। इन स्थलों में कुछ निम्नांकित हैं:

1) राजस्थान में दिदवाना
2) गुजरात में हिरन घाटी
3) सिंधु और झेलम नदियों के बीच पोटवार पठार
4) पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रदेश में संघाव (Sanghao) गुफा
5) राजस्थान में बुद्ध पुष्कर
6) अरावली पहाड़ियों के पश्चिम में लूनी नदी द्वारा प्रदत्त औज़ार उद्योग
7) महाराष्ट्र में चिरकी-नेवासा
8) उत्तर प्रदेश में कलपी

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बोध प्रश्न 1

1) पाषाण युग को कितने भागों में बांटा गया है? प्राक्-इतिहास के उद्भव के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें।

....

....

....

....

....

2) भारतीय निम्न पुरापाषाण युग की मुख्य सांस्कृतिक परंपराओं की चर्चा करें?

....

....

....

....

....

3) भारतीय मध्य पुरापाषाण काल के किन्हीं दो स्थलों की चर्चा करें।

....

....

....

....

....

2.9 उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृतियाँ

उच्च पुरापाषाण काल पुरापाषाण युग का तीसरा और अंतिम उपखंड है जो मानव उपलब्धियों की पराकाष्ठा को दर्शाता है। उच्च पुरापाषाण संस्कृतियों का विकास यूरोप, दक्षिण-पश्चिमी एशिया, अफ्रीका, दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में उच्च प्रातिनूतन युग के उत्तरवर्ती काल में हुआ, जिसे अतिकालीन (Late) प्रातिनूतन युग के रूप में भी जाना जाता है।

व्यापक तौर पर, उच्च पुरापाषाण काल 40,000 से 10,000 वर्ष पूर्व माना गया है। इस सांस्कृतिक चरण से जुड़ी मानव प्रजाति शारीरिक रूप से आधुनिक होमो सेपियंस (AMHS: Anatomically Modern Homo Sapiens) के नाम से जानी जाती है, जो वर्तमान समय की तथा एकमात्र जीवित मानव प्रजाति है। हम इसी प्रजाति के हैं। उच्च पुरापाषाण युगीन संस्कृति मध्य पुरापाषाण काल की मुस्टेरियन या पुराने पत्तरनुमा औज़ारों की संस्कृति के बाद आती है जो पुरातन विश्व (Old World) के विभिन्न हिस्सों में पाई जाती है।

पत्थरों के उपकरणों के निर्माण के क्षेत्र में उच्च पुरापाषाण काल की पहचान इसके तकनीकी विकास से की जाती है। इन औज़ारों में एक ओर धार को तेज किया जाता था तथा दूसरी तरफ़ कुंद रखा जाता था। धार परतदार होती है, लेकिन बहुत पतली और चपटी, जो आकार में लंबी और दोनों तरफ़ से बराबर होती है। धार बनाने के लिए पहले

मूल पत्थर को चारों तरफ़ से घिसकर चिकना किया जाता था। उसके बाद, उसे चारों तरफ़ से काटकर, ठोककर, कई धारों को तैयार किया जाता था। इसका अर्थ था कि धार को अप्रत्यक्ष चोट से न कि प्रत्यक्ष चोट से तैयार किया जाता था। धार या ब्लेड की पहली श्रृंखला के निकलने के बाद दूसरी, तीसरी एवं अन्य श्रृंखलाएँ निकाली जाती थीं जब तक कि मूल पत्थर समाप्त न हो जाए। इस प्रकार, इस ब्लेड बनाने की तकनीक में एक मूल पत्थर से अनेक ब्लेड तैयार किये जाते थे। यह मूल पत्थर देखने में घनक्षेत्र (Prism) के जैसा या बाँसुरीनुमा होता है; अतः इस तकनीक को ''Prismatic Core'' या ''Fluted Core'' तकनीक कहा जाता है। इन ब्लेडों को बहुत अधिक तराशा जाता था, जिसमें इसे कुंद करके अन्य कई उपकरण बनाए जाते थे। इस प्रकार के तराशने को मोटी किनारी बनाना, जिससे आधार प्रदान होता है, (Backing) कहा जाता है और इस प्रक्रिया से बने उपकरणों को आधारयुक्त-ब्लेड-उपकरण (Backed Blade Tools) कहा जाता है। उच्च पुरापाषाण कालीन उद्योग के उपकरण फलक और मूल पत्थर के बने काफ़ी विविध प्रकार

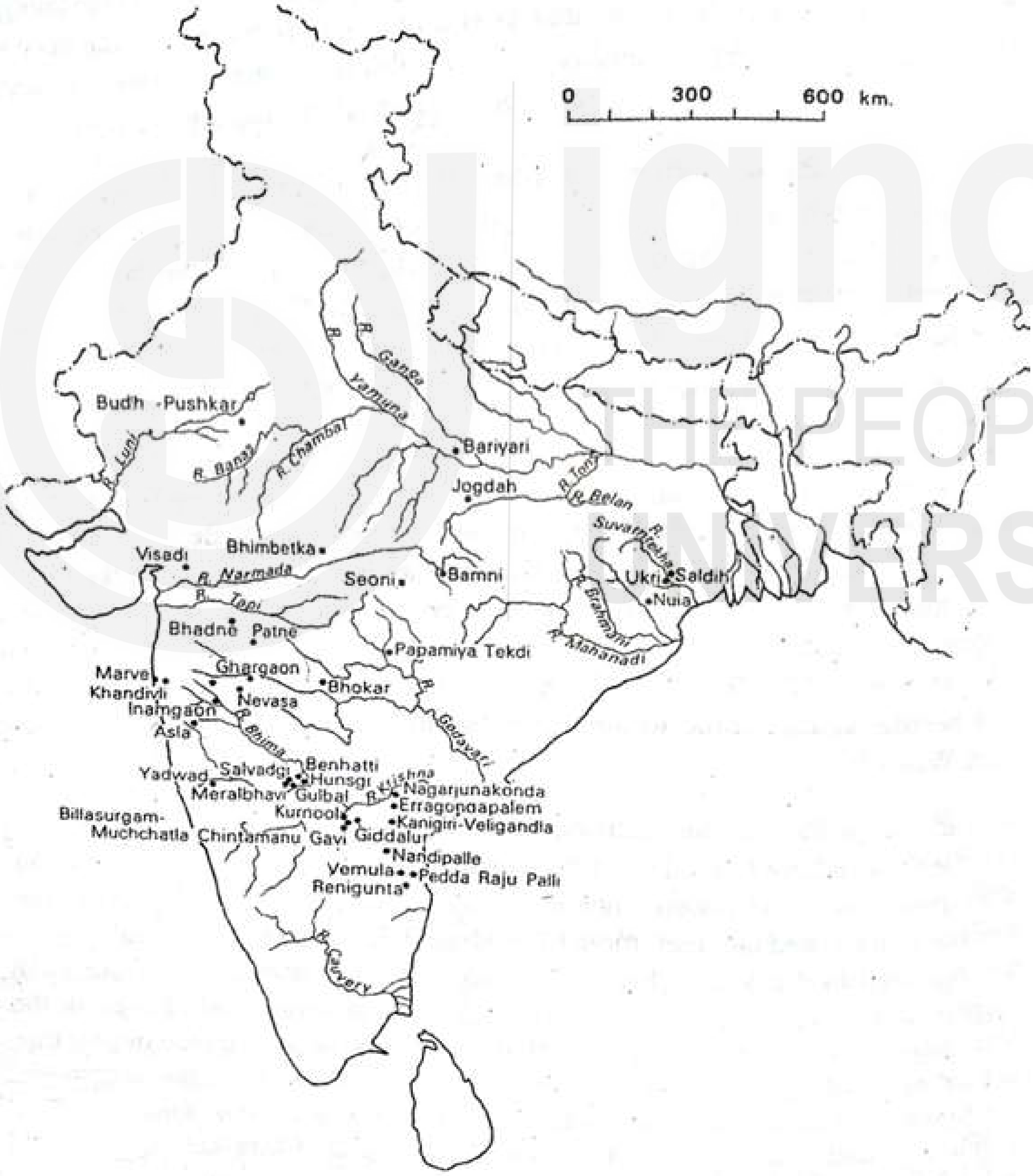

मानचित्र 2.3: भारत में उच्च पुरापाषाण कालीन स्थलों का वितरण। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-3।

के होते हैं, जैसे एकतरफा खुरचनी, अंडाकार खुरचनी, नोकदार खुरचनी, गोलाकार खुरचनी, एक सतह वाली और दोहरी सतह वाली खुरचनियाँ। इनमें से कुछ पत्तर के उपकरण लेवालोय (Levallois) तकनीक व (Discoid core) तकनीक से निर्मित होते हैं और गोलाकार खुरचनियाँ मध्य पुरापाषाण काल की परंपरा की निरंतरता को दर्शाती थे। इनमें से कुछ पत्तरों से बने एकतरफा ब्लेडों को मुट्ठा (Hafts) में जोड़ा जाता था जिससे घेरानुमा या घुमावदार मत्स्यबर्छियाँ (Harpoons) बनाई जाती थीं। इन उपकरणों में दानेदार पत्थरों का प्रयोग कच्ची सामग्री के रूप में किया जाता था।

भारत में उच्च पुरापाषाण काल

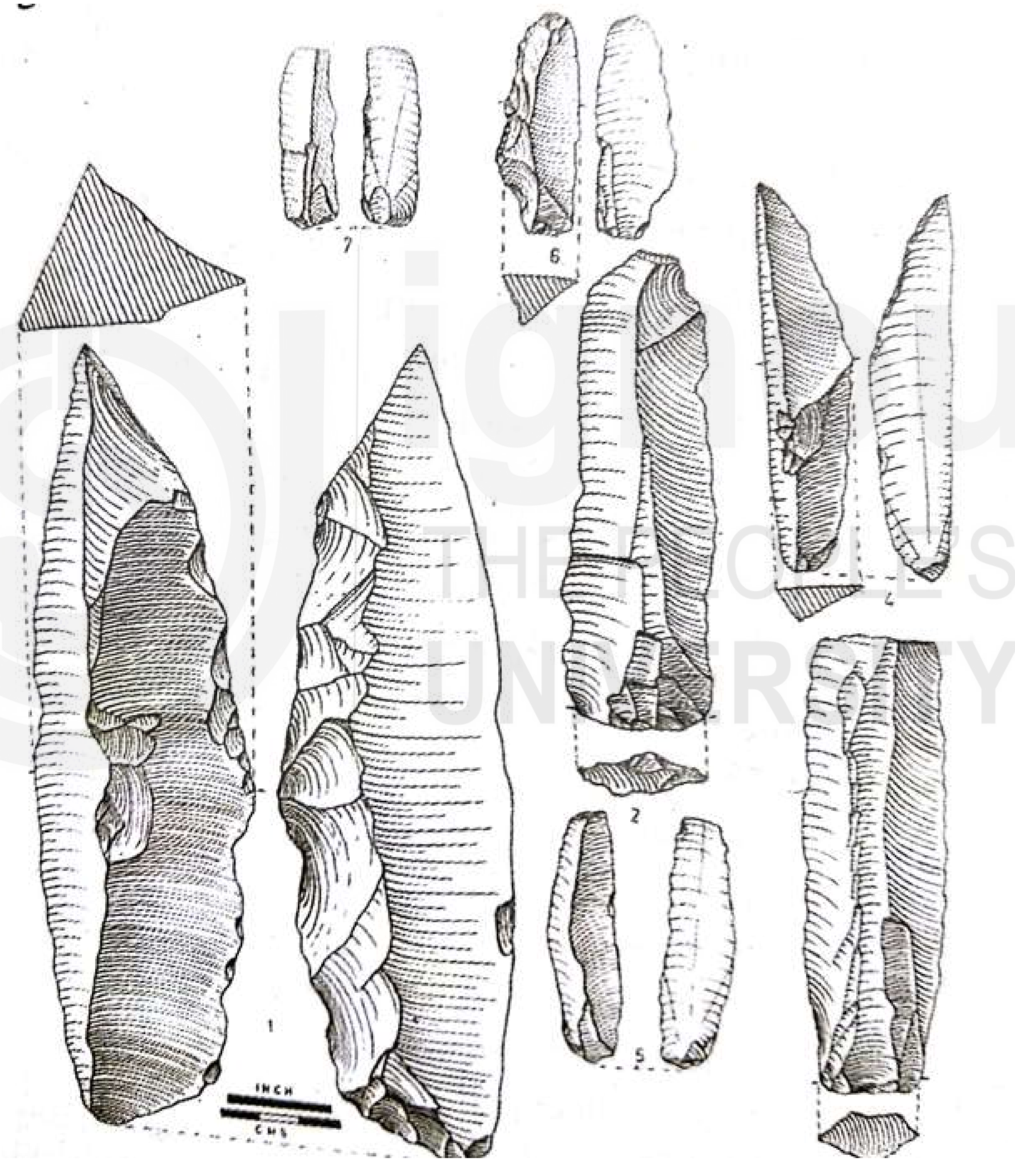

चित्र 2.7: रेनीगुंटा के निकट रल्लाकलावा (Rallakalava) घाटी से प्राप्त ब्लेड-और-तक्षणी उद्योग के पुरावशेष. 1, 4, 6: पुनःसज्जित (Retouched) ब्लेड; 2, 3, 5, 7: साधारण ब्लेड (मूर्थी (Murthi), 1979)। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई 3।

ब्लेड रूपी उपकरण बनाने की तकनीक पर आधारित उच्च पुरापाषाण काल की संस्कृति के अवशेष भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में (मानचित्र 2.3) पत्थर के उपकरणों के रूप में मिलते हैं। चूँकि इनमें से अधिकतर उपकरण कार्बनिक (Carbonic) पदार्थ से बने थे, अतः खुली हवा में ये नष्ट हो गए हैं जिसके कारण इनका पता करना कठिन है। हड्डियों से बने उपकरणों को आंध्रप्रदेश के कर्नूल से प्राप्त किया गया है जहाँ इनके संरक्षण की परिस्थितियाँ अनुकूल थीं।

दक्षिणी पूर्वी घाट (Southern Eastern Ghats) में राल्लाकलावा (Rallakalava) [वेडुल्लाचेरूवू (Vedullacheruvu), नल्लागुंडलू (Nallagundlu)] और गुंजूना (Gunjuna) [पेड्डराजूपल्लि (Peddarajupalli), वोडिकालु (Vodikalu), बेल्लु (Bellu)] घाटियों में से ब्लेड-और-तक्षणी (Burin) उद्योग की पुष्टि करने वाले सर्वोत्तम नमूने मिले हैं (चित्र 2.7-2.10)।

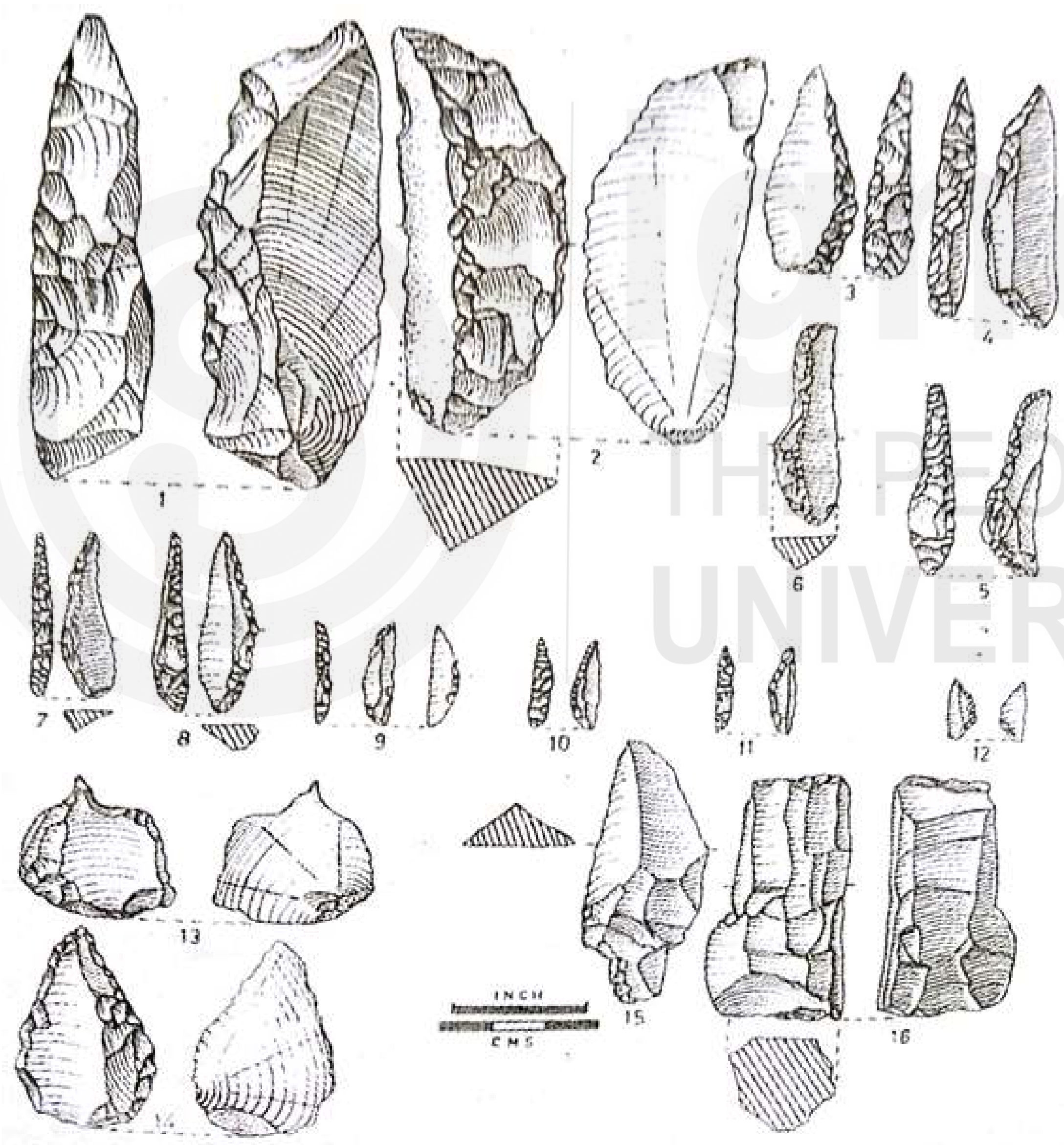

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

चित्र 2.8: रेनीगुंटा के निकट रल्लाकलावा घाटी से प्राप्त ब्लेड-और-तक्षणी उद्योग की पुरावशेष। 1, 2 आधारयुक्त/मुट्ठानुमा (Backed) चाकू; 3-12 मुट्ठानुमा ब्लेड और लघु ब्लेड (Bladelet) वाले उपकरणों के प्रकार (5 और 6 मुट्ठानुमा क़लमतराश चाकू (Pen Knives) हैं); 13 सुतारी (Awl); 14 एकतरफा खंती (Unifacial Point); 15 चूलदार (Tanged) खंती; 16 ब्लेडनुमा मूल पत्थर (Blade Core) (मूर्थी (Murthy), 1979)। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-3।

भारत के विभिन्न हिस्सों से प्राप्त उच्च पुरापाषाण काल की रेडियोकार्बन तिथियाँ और कर्नूल की गुफाओं से प्राप्त ताप संदीप्ति काल-निर्धारण पद्धति (Thermoluminiscence) की तिथियाँ 40,000 बी.सी.ई. से 8000 बी.सी.ई. के बीच पड़ती हैं। कर्नूल से प्राप्त उच्च पुरापाषाण काल के पशुओं के अवशेष भी उत्तरवर्ती प्रातिनूतन युग से संबंधित हैं।

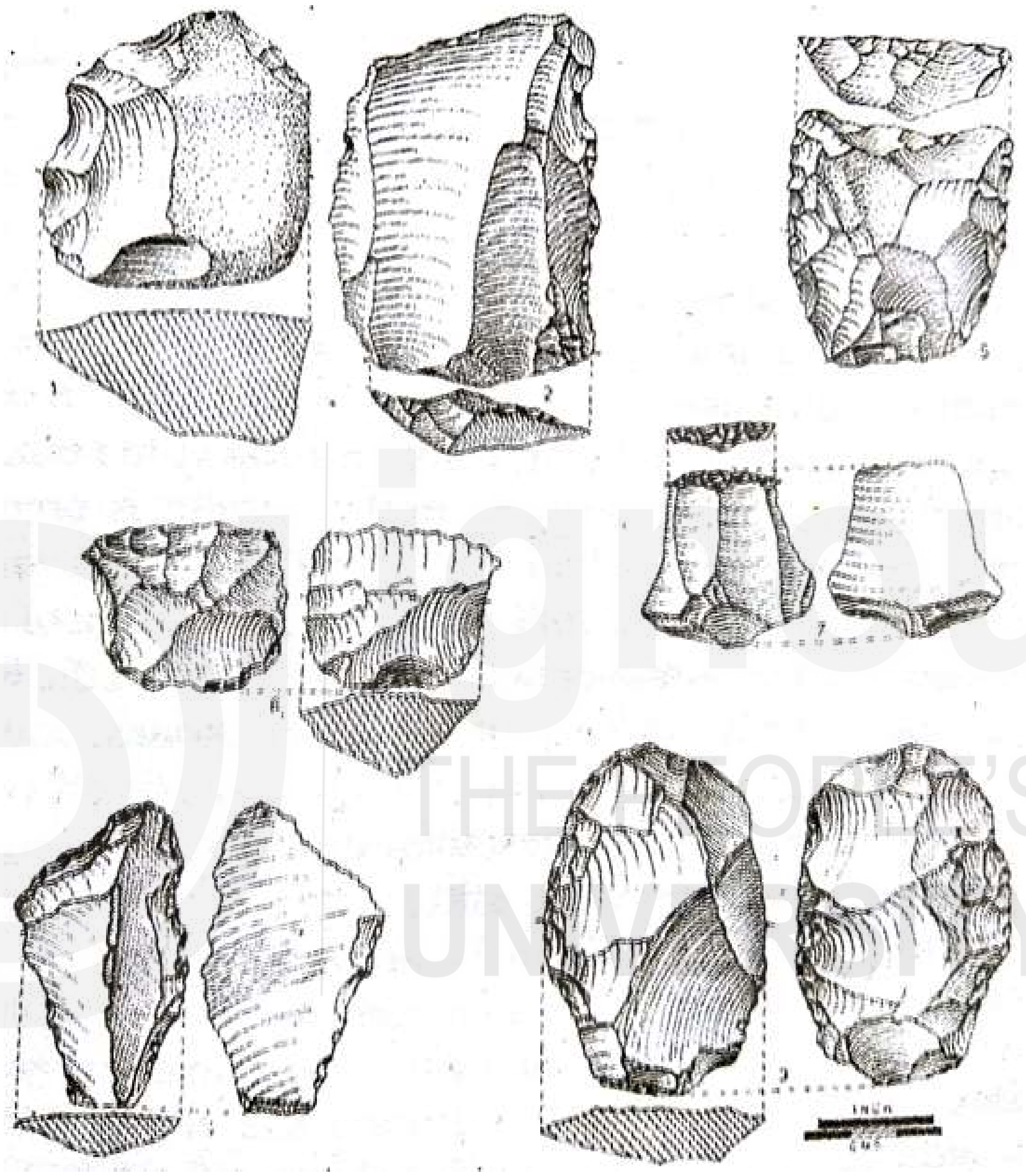

चित्र 2.9: रेनीगुंटा के निकट रल्लाकलावा से प्राप्त ब्लेड-और-तक्षणी उद्योग के पुरावशेष. 1 उत्तलनुमा खुरचनी; 2,4 एकतरफा खुरचनी (Side Scraper); 3 अंडाकार खुरचनी (Ovate Scraper); 5, 6, 7 नुकीली खुरचनी (End Scraper) (मूर्थी, 1979)। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-3।

उच्च पुरापाषाण काल के स्थान

भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ प्रमुख उच्च पुरापाषाण कालीन स्थल निम्नांकित हैं :

1) उच्च सिंध में रोहिरी (Rohiri) की पहाड़ियाँ

2) निम्न सिंध में माइलस्टोन 101

3) बेलन घाटी में चोपानी माण्डो (Chopani Mando)

4) मध्य प्रदेश में बाघोर 1
5) बिहार के मुंगेर जिले में पैसरा
6) बांग्लादेश में लालमाई (Lalmai) पहाड़ियाँ
7) पश्चिमी त्रिपुरा में हाओरा (Haora) और खोवाई (Khowai) नदी घाटियाँ
8) आंध्र प्रदेश में कर्नूल
9) आंध्र प्रदेश में मुच्छातला चिंतामनु गवि (Muchchatla Chintamanu Gavi)
10) आंध्र प्रदेश के चित्तोर (Chittor) जिले में रेनीगुंटा

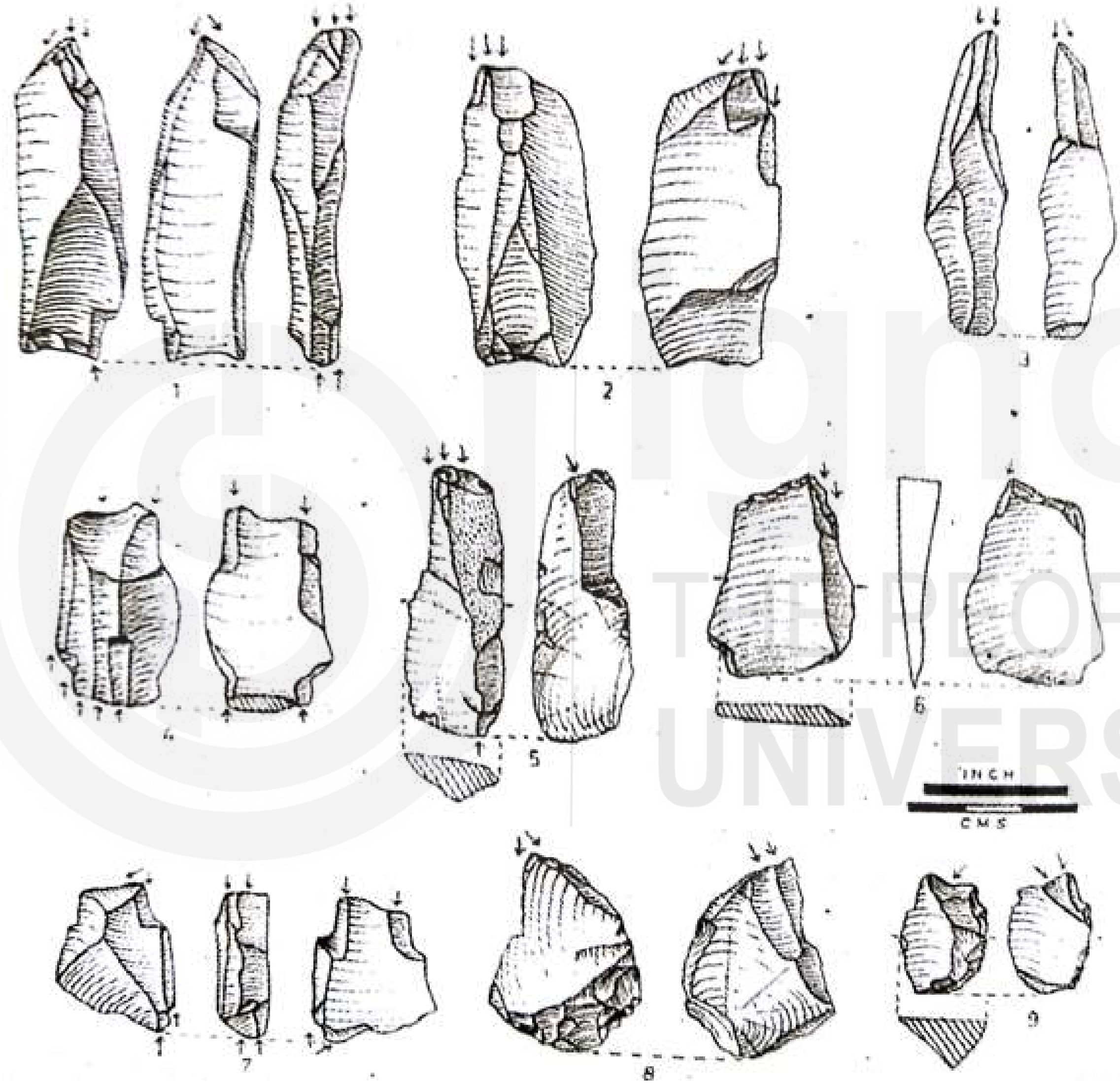

चित्र 2.10: रेनीगुंटा के निकट रल्लाकलावा से प्राप्त ब्लेड-और-तक्षणी उद्योग के पुरावशेष. 1-9 तक्षणी के विभिन्न प्रकार (मूर्थी, 1979)। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-5, इकाई-3।

हड्डी उपकरण (Bone Tool) उद्योग

उच्च पुरापाषाण काल के हड्डी उपकरण आंध्र प्रदेश के कूर्नूल गुफा स्थलों से प्राप्त होते हैं। रॉबर्ट ब्रूस फुट और उनके पुत्र हेनरी ब्रूस फुट ने 1880 में बिल्लासुरगम गुफाओं की खुदाई से उत्तरवर्ती प्रातिनूतन काल के पशुओं की हड्डियों से बने उपकरण प्राप्त किए। इन उपकरणों में नुकीले तीर, खंजर, खुरचने वाला चाकू, छेनी, कील, कुल्हाड़ी इत्यादि शामिल थे। 1970 में की गई खुदाई से यह बात पुनः पुष्ट होती है। गुफाओं के इन हड्डी

से बने उपकरणों से उनकी अपरिपक्व तकनीक का पता चलता है। ऐसा इसलिए था क्योंकि गुफाएँ अल्पकालीन आश्रय होती थीं, अतः अल्पकालीन आश्रय की स्थिति में पूरी तरह तैयार पुरावशेषों की संपूर्ण प्रस्तुति संभव नहीं होती। मुच्छातला चिंतामनु गवि गुफा (एम.सी.जी.-I और एम.सी.जी.-II) में अधिक खुदाई से उत्तरवर्ती प्रातिनूतन के समय के पशुओं की हड्डियों से बने उपकरणों के साथ-साथ ब्लेडनुमा उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस गुफा के हड्डी उपकरणों में खुरचनियाँ, छेदक, छेनियाँ, करछे (Scoops), डोल, कंधे/ कंधेदार वाली खंती, सूआ, कंटिया इत्यादि औज़ार शामिल हैं (चित्र 2.11)।

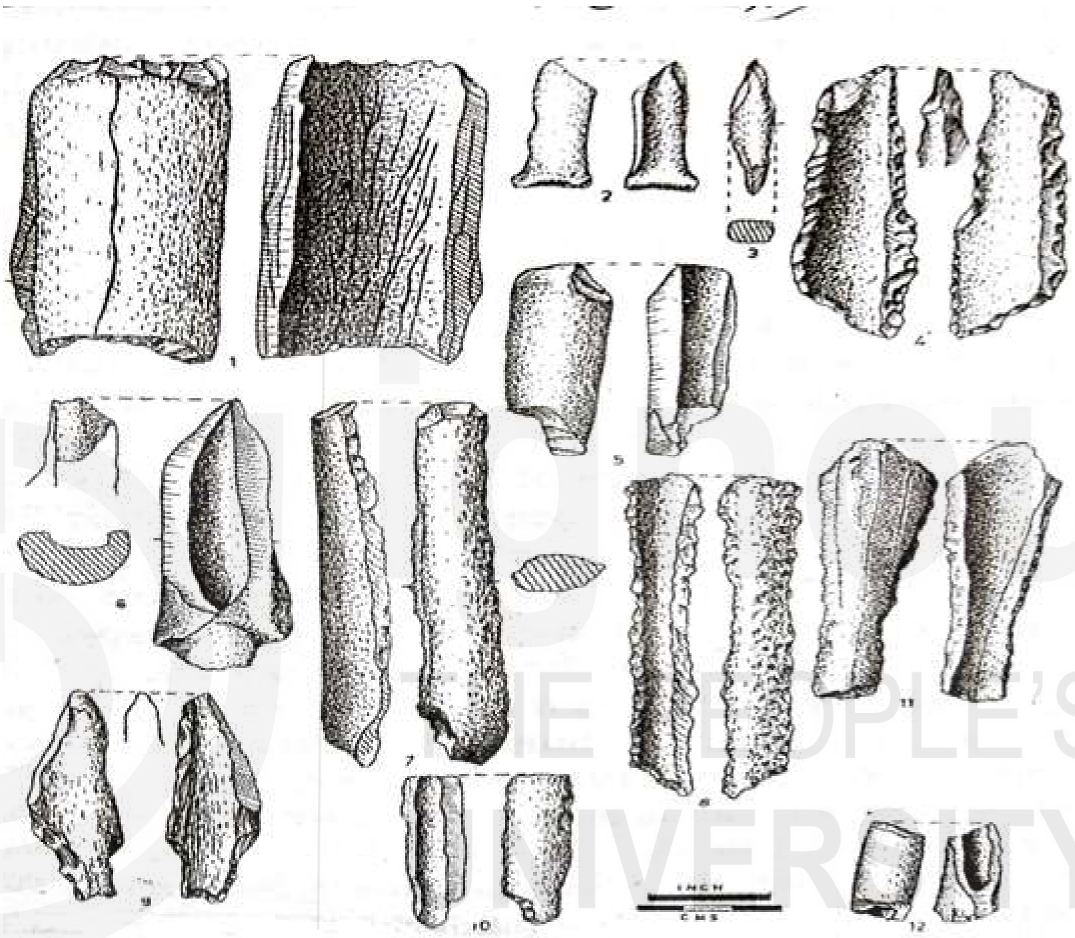

चित्र 2.11: मुच्छातला चिंतामनु गवि गुफा 1 (एम.सी.जी.-I) से प्राप्त हड्डी से बने उपकरण (कूर्नूल गुफाएँ). 1. विदारक; 2-3) छेदक 4-6) छेनी; 7-8) स्पैटुला; 9) घुमावदार चाकू; 10) चौड़ा चाकू, टूटा हुआ; 11) अस्थि ब्लैन्क 12) दोधारी अस्थि चाकू (मूर्थी, 1979)। स्रोत : एम. ए.एन.-002, खंड 5, इकाई-3।

2.10 मध्य पाषाण कालीन संस्कृति

मध्यपाषाण काल की शुरुआत 8000 बी.सी.ई. में शुरू हुई। यह पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच का संक्रमण काल था। इस समय तापमान अधिक था और जलवायु आर्द्र एवं शुष्क थी। ऐसी जलवायु ने मानव जीवन को प्रभावित किया तथा वनस्पति एवं जीव जंतुओं में परिवर्तन हुआ। गर्म जलवायु होलोसीन (Holocene) युग से संबंधित थी। प्रातिनूतन युग के बाद होलोसीन काल आया। होलोसीन को नव या नवतापीय चरण के रूप में भी जाना जाता है। हम इसी युग में रह रहे हैं। होलोसीन काल की शुरुआत 10,000 बी.सी.ई. में हुई।

भूवैज्ञानिक युग

वर्तमान में, भूवैज्ञानिकों ने जीवन के प्रकारों के विकास के अनुरूप पृथ्वी के इतिहास को चार युगों में विभाजित किया है :

i) प्राथमिक (पुराजीवी)

ii) माध्यमिक (मध्यजीवी)

iii) तृतीयक, तथा

iv) चर्तुभागीय

तृतीयक तथा चतुर्थ भाग मिलकर सेनोज़ोइक (Cenezoic) काल अर्थात् स्तनधारियों के युग का निर्माण करते हैं जिसकी शुरुआत 10 करोड़ वर्ष पहले हुआ थी। सेनोजोइक युग का विभाजन सात युगों में होता है जिसके दो अंतिम युग थे– प्रातिनूतन और होलोसीन – जो मानव विकास के इतिहास में महत्वपूर्ण हैं। प्रातिनूतन काल लगभग 16 लाख वर्ष पूर्व शुरू हुआ और होलोसीन (या नव युग जिसमें हम रहते हैं) लगभग 10,000 साल पहले शुरू हुआ।

स्रोत : उपिंदर सिंह, 2008, पृष्ठ 60.

मध्य पाषाण काल के लोगों का जीवन वैसे तो पुरापाषाण काल के खानाबदोश जीवन जैसा था, परन्तु पुरापाषाण काल के लोगों की जीवन शैली की तुलना में अधिक विस्तृत था। पौधों और पशुओं के साथ उनके लंबे अनुभव तथा परस्पर क्रिया ने उन्हें प्रजाति-विशिष्ट शिकारी व संग्रहकर्ता बना दिया। अर्थात् वे कुछ पादपों और पशुओं को अन्य पादपों एवं पशुओं की तुलना में अधिक तवज्जो देते थे। उत्तर प्रातिनूतन युग के दौरान प्रारंभिक होलोसीन काल में यूरोप में उत्पन्न हुई संस्कृति, को मध्य पाषाण काल की संस्कृति कहते हैं।

शब्दावालियाँ

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के संस्थापक-महानिदेशक सर अलेक्ज़ेडर कनिंघम के सहायक ए.सी. कार्लाइल ने पूर्वी भारत के विंध्य पहाड़ी क्षेत्रों के शैलाश्रयों एवं गुफाओं से बड़ी संख्या में छोटे-छोटे पत्थरों के औज़ारों का पता लगाया। इस संग्रह में अर्द्धचन्द्राकार, विषम चतुर्भुजाकार, त्रिकोणीय तथा मुलायम लघु चाकुओं (knife-lets) जैसे पत्थर के छोटे उपकरण शामिल थे। कोई भी औज़ार 1.6 से.मी. से अधिक लंबा नहीं था। ये उपकरण पूरी तरह से तैयार नहीं थे। कार्लाइल ने पर्याप्त स्तरीकृत सबूत दिए जिससे पता चलता है कि ये औज़ार पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच के समय के हैं। इनकी संस्कृति दोनों युगों से मिलती जुलती थी। कार्लाइल ने इसे मध्य पाषाण काल का मध्यवर्ती काल बताया।

परंपरागत तौर पर, प्रातिनूतन युग को 10,000 बी.सी.ई. के आस पास निर्धारित किया जाता है। यूरोप में मध्यपाषाण काल का निर्धारण लगभग 9,500 बी.सी.ई. में किया गया है। मध्य पाषाण काल का अंत कृषि की शुरुआत के साथ लगभग 6000 से 5000 बी.सी.ई. में बताया गया है (प्राइस, 1991)।

उपकरणों के प्रकार तथा प्रौद्योगिकी

इस सांस्कृतिक चरण के सबसे आम और प्रमुख उपकरण सूक्ष्म उपकरण (Microliths) हैं। प्रौद्योगिकी के लिहाज से, यह परंपरा पुरापाषाण काल से निरंतर चली आ रही थी। ये सूक्ष्म

उपकरण पुरापाषाण काल के अंतिम चरण से बनना शुरू हुए जो मध्य पाषाण काल में प्रमुख हो गए। सूक्ष्म उपकरण निर्धारित करने के लिए उपकरण की लंबाई की सीमा तीन से.मी. मानी जाती है। इसके अलावा, मध्य पाषाण काल के सूक्ष्म उपकरण इस काल के तकनीकी रूप से समृद्ध लोगों द्वारा बनाए जाते थे। यह मुख्यतः औज़ार के किनारे को परिष्कृत (retouching) करके या मूठ को जोड़ने वाले किनारे (hafling edge) को मुथरा (blunting) करने से परिलक्षित होता है। इसमें इस्तेमाल की गयी तकनीक में ठोकना (punch) और दबाव देना होता था, जो पुरापाषाण काल में विकसित हुई। इस कारण, सूक्ष्म उपकरणों की पहचान मुख्यतः उनकी खोज और तिथि निर्धारण के संदर्भ पर निर्भर करती है।

सूक्ष्म उपकरणों को ज्यामितीय और गैर–ज्यामितीय आकारों के संदर्भ में वार्णित किया जाता है। ज्यामितीय प्रकारों में समलंबी, त्रिकोण, चन्द्राकार इत्यादि आते हैं। गैर-ज्यामितीय प्रकारों में मुट्ठे या पीठ को कुंद करना (blunting), आंशिक, पूर्णतः या समग्र रूप से खुरचनी, छेदक, खंती, चाकू, तक्षणी इत्यादि को कुद/मुथरा करना शामिल है (चित्र 2.12)।

सूक्ष्म उपकरणों का प्रयोग पौधों को काटने, संग्रह करने, छाँटने, उनके रेशों को बीनने; जाल बनाने; पत्थरों को तोड़ने; धनुष को बनाने इत्यादि में समग्र उपकरणों के रूप में होता था। इन उपकरणों में लकड़ी, हड्डी और बारह सिंगे के शाखादार सींग इत्यादि इस्तेमाल होते थे। इनका प्रयोग किसी चीज़ को सीधे-सीधे काटने में होता था। इनका प्रयोग अक्सर तिरछे ब्लेडों, छोटे ब्लेडों, चौड़े, समलंबी, घुमावदार एवं रेतीदार ब्लेडों के निर्माण में भी होता था। कभी-कभी चन्द्राकार और त्रिकोणीय उपकरणों को उर्ध्वाधर रखकर आरी की धार को तैयार किया जाता था। ऐसे जटिल उपकरणों को बनाने की प्रक्रिया उच्च पुरापाषाण काल से मध्य पाषाण काल तक जारी रही।

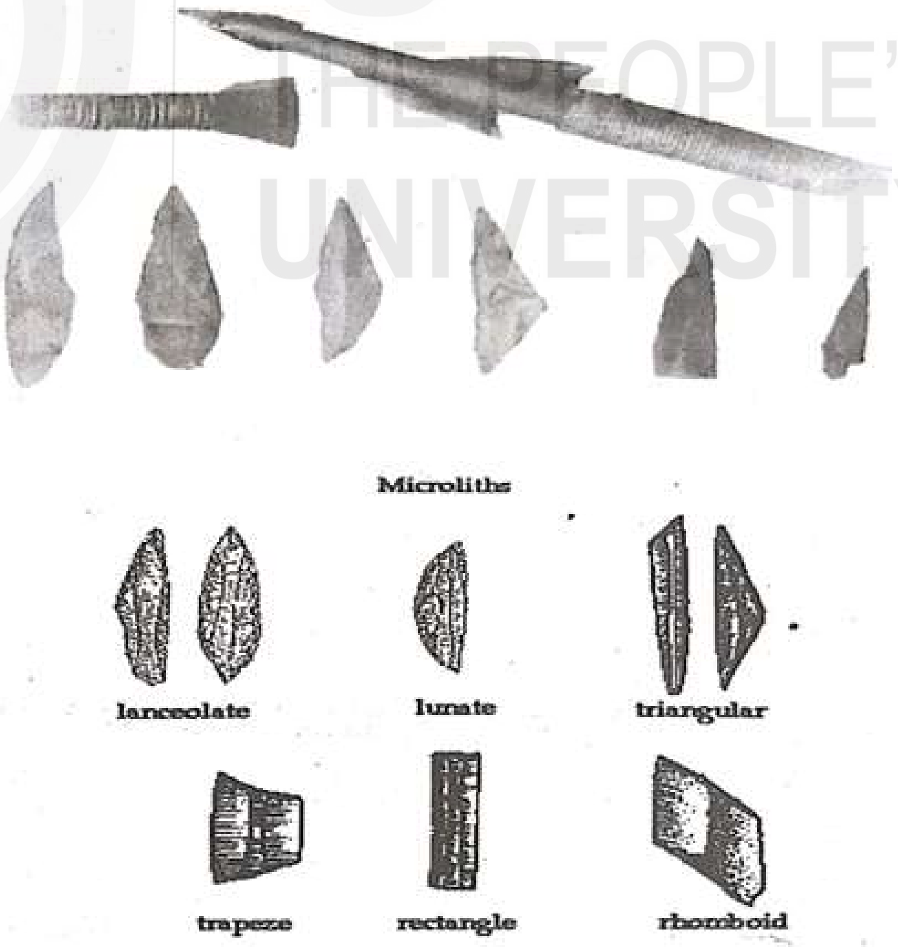

चित्र 2.12: सूक्ष्म उपकरण (Microliths) स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-6, इकाई-1।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सूक्ष्म उपकरण तकनीक से छोटे-छोटे एवं बड़े-बड़े पत्थर से औज़ार का निर्माण किया जाता रहा। सूक्ष्म उपकरणों को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह तक ले जाना आसान था। मध्यपाषाण काल के लोग एक जगह पर लंबे समय तक रहते थे। इस प्रकार, उन्होंने बहुत तीक्ष्ण एवं मजबूत सामग्री जैसे चकमक पत्थर/अग्नि पत्थर, सिक्थ स्फटिक, गोमेद, इंद्रगोप इत्यादि जो प्रकृति में छोटे पिंडों के रूप में पाए जाते थे, से औज़ारों को निर्मित करना सीखा।

मध्य पाषाण काल के लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले एक अन्य प्रकार के उपकरणों को बृहत् उपकरण (चित्र 2.13) कहा जाता है। ये सूक्ष्म उपकरणों से बड़े होते थे।

चित्र 2.13: बृहत् उपकरण। स्रोत : एम.ए.एन.-002, खंड-6, इकाई-1।

ये उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों जैसे खुरचनियों की निरंतरता को दर्शाते हैं। साथ-साथ नए प्रकार के औज़ार जैसे कुल्हाड़ियाँ और कुदालियाँ भी इस्तेमाल होने लगे। इन्हें

चित्र 2.14: हड्डी से बने मछली पकड़ने वाले कांटे, सुइयाँ और मछली पकड़ने के लिए जाल बनाने वाली ढरकियाँ (सर्जियेवो-पोसाडिसकी जिला)। मध्यपाषाण काल। स्रोत : विकीमिडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Fishing_tools_stone_age_SPMZ.jpg).

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

भारी उपकरण माना जाता है। वे मुख्यतः चकमक पत्थर जैसे पत्थरों के बने होते थे। औज़ारों को परतें उतार कर तैयार किया जाता था जिसमें उनकी कार्यरत धार (working edge) को आड़ा (traverse) बनाया जाता था। कामकाजी किनारे की प्रकृति के अनुसार उन्हें कुल्हाड़ी (adze) कहा जाता है। वे लकड़ी पर काम करने के लिए प्रयुक्त होते थे। कुल्हाड़ी, बसूले या कुदाली को लकड़ी, हड्डी या बारहसिंगे के शाखादार सींग से जोड़कर बनाया जाता था। इन उपकरणों से जंगलों के वातावरण से निपटने में सहायता मिलती थी।

हड्डी (चित्र 2.14) या बारहसिंगों के शाखादार सींग से बने उपकरण एक और श्रेणी के उपकरण हैं जिनका प्रयोग मध्यपाषाण काल के लोगों द्वारा किया जाता था। हड्डी का इस्तेमाल मुख्य रूप से कांटेदार बर्छियाँ (harpoons) बनाने के लिए किया जाता था। कंटियाओं (barbs) की संख्या, मूठ (shaft) के बराबर में उनकी अविस्थिति तथा उनकी प्रकृति व आकार के आधार पर बर्छियों में विभिन्न प्रकार पहचाने जाते हैं। उनका प्रयोग मछली पकड़ने के कांटों और अंकों के रूप में किया जाता था। समग्र उपकरण बनाने के लिए हड्डियों का प्रयोग दस्तों (hafts) के रूप में भी होता था।

अधिकांशतः बारहसिंगों के कटे हुए सिंग का इस्तेमाल उपकरण बनाने में होता था। सिंग को भौंहों के पास से काटा जाता था जिसका प्रयोग कुल्हाड़ी या बसूला बनाने में किया जाता था। कभी-कभी बारसिंगे के शाखादार सींग को कुल्हाड़ियों व बसूलों के मूठ के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

भारतीय मध्य पाषाण काल की संस्कृति

मध्यपाषाण काल या मध्य पत्थर युग (Middle Stone Age) पुरापाषाण की तुलना में कहीं अल्प अवधि के लिए था। यह श्रीलंका एवं अफ्रीका के कुछ हिस्सों में 30,000 वर्षों से लेकर भारत और पश्चिम एशिया में 10,000 वर्षों तक चला। सूक्ष्म उपकरणों के प्रयोग के अलावा, मध्य पाषाणकाल के लोगों ने शिकार करने के लिए तीर, धनुष, वनस्पति खाद्य पदार्थों जैसे जड़ व कंद को अनेक प्रकार विकसित किए। उन्होंने हजारों चित्र बनाए जिससे उनके सौंदर्यबोध का आभास होता है। साथ ही, यह भी पता चलता है कि कैसे उन्होंने अपने जीवन निर्वाह के लिए तकनीकी उपकरणों, जीवन निर्वाह आधारित अर्थव्यवस्था (subsistence economy) के तरीकों, संस्कृति की भौतिक सामग्रियों, सामाजिक संगठन एवं धर्म का विकास किया।

भारतीय मध्य पाषाण काल के स्थान/मध्य पाषाणकालीन स्थान

सूक्ष्म उपकरण और अन्य मध्यपाषाण कालीन उपकरणों की सबसे प्राचीन खोज ए.सी.एल. कार्लाइल द्वारा की गई थी। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के शलाश्रायों में सूक्ष्म उपकरण, शिलाचित्र, पीसने के निशान युक्त वर्णक टुकड़े (pigment pieces) मानव कंकाल, पशु हड्डियों, राख, कोयले के टुकड़े मिले। उन्होंने भाला, तीर, धनुष और कटार से जंगली पशुओं का शिकार करते दिखाते चित्रों की भी खोज की। मध्य पाषाणकालीन जीवन को दर्शाती कला की यह पहली खोज थी। फलतः आगे चलकर उत्तर प्रदेश, आंध्रप्रदेश में कर्नूल गुफाओं और दक्षिण भारत और गुजरात के बड़े स्थलों पर शोध किये गए। मध्य पाषाणकालीन स्थल उत्तर-पूर्व को छोड़कर लगभग पूरे भारत में पाए जाते हैं (मानचित्र 2.4)। यहाँ तक कि ये गंगा के मैदानी इलाकों, जहाँ पत्थर के संसाधन कम हैं, में भी पाए जाते हैं। यह दर्शाता है कि मध्य पाषाणकालीन खानाबदोशों ने पूरे उपमहाद्वीप में अपना विस्तार किया। प्राक्-इतिहास के पूरे 20 लाख वर्षों में ऐसा पहली बार हुआ था।

भारत के प्रमुख उत्खनन स्थल :

- राजस्थान में गणेश्वर, बागोर, तिलवारा।
- गुजरात में लंघनाज, अखज (Akhaj), वलासना, हिरपुरा, अमरापुर, देवनिमोरी, ढेकवाडलो (Dhekvadlo), तरसंग।
- महाराष्ट्र में पटने (Patne), पचाड़ हाटखंबा।
- उत्तरप्रदेश में मोरखाना, लेखाहिया (Lekhahia), बाघाई, खोर (baghai Khar), सराई नाहर राय, महादहा, दमादमा, चोपनी मंडो, बैधा पुतपुरीहवा।
- मध्यप्रदेश में पंचमढ़ी, आदमगढ़, पुतलीकरार, भीमबेटका, बाघोर II, बाघोर III, घांघरिया।
- बिहार में पैसरा

मानचित्र 2.4: भारतीय मध्य पाषाणकालीन स्थल (वी. एन. मिश्रा, 1989)। स्रोतः एम.एच.आई.-08, खंड-2, इकाई-5।

- उडीशा मे कुचाई
- पश्चिम बंगाल में बीरभनपुर
- आंध्र प्रदेश में मुच्छातला चिंतामनु गवि, गोरी गुंडम
- कर्नाटक में संगनाकल्लु
- केरल में तेनमालई

हमारे, सराय नहर राय, महादहा और आदमगढ़ जैसे स्थल प्राचीन निर्धारण एवं भौतिक संस्कृति के कारण वास्तव में मध्य पाषाणकालीन स्थल हैं।

उपर्युक्त उत्खनन स्थलों से हमें प्रौद्योगिकी, भौतिक अवशेष, दफनाने की व्यवस्था, शारीरिक अवशेष, दफन से संबंधित प्रथाओं, कला एवं चारकोल की भरपूर जानकारी मिलती है।

हमारे पास लगभग बीस स्थानों से साठ के आसपास रेडियो कार्बन एवं थर्मोल्युमिनिसेंस निर्धारण से प्राप्त तिथियां उपलब्ध है। इनसे यह ज्ञात होता है कि मध्य पाषाणकालीन लोग 10,000 बी.सी.ई से 2000 बी.सी.ई. के बीच के समय के दौरान रहते थे। उनके उत्तरवर्ती इतिहास में वे अनेक ग्रामीण एवं शहरी संस्कृतियों के संपर्क में आए। इस संपर्क के परिणास्वरूप, उनके खानाबदोश शैली वाले जीवन में अभूतपूर्व बदलाव आया। अधिकांशतः खाना-बदोश बस गए, कृषि के साथ-साथ अन्य स्थानबद्ध व्यवसायों को अपनाया और धीरे-धीरे हिंदू जाति व्यवस्था पर आधारित समाज में आत्मसात हो गए।

बोध प्रश्न 2

1) भारत के उच्च पुरापाषाण कालीन दो स्थानों का नाम बताएँ? किसी एक का सविस्तार वर्णन करें।

....

....

....

....

....

2) सूक्ष्म उपकरण (Microliths) क्या होते हैं? कुछ उदाहरण दें।

....

....

....

....

....

2.11 सारांश

भारतीय पुरापाषाण काल तीन चरणों में बँटा हुआ है जो तकनीक और विभिन्न उपकरणों के विकास को दर्शाते हैं : निम्न पुरापाषाण काल, मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल। निम्न पुरापाषाण कालीन सांस्कृतिक परंपरा की विशेषता हस्त-कुल्हाड़ी और चिकने पत्थर के बने काटने वाले औज़ार (pebble chopper chopping tools) हैं। उपकरणों के निर्माण के लिए नदियों से प्राप्त पत्थरों के साथ-साथ चूना पत्थर, डोलराइट

और अबरक भी अधिक उपयुक्त पत्थर थ। पत्थर के हथौड़ों, नरम हथौड़ों तथा तैयार किए गए मूल-पत्थर (Core) की तकनीकों का इस्तेमाल शल्कों को अलग करने एवं उपकरणों का स्वरूप देने में होता था। मध्य पुरापाषाण कालीन संस्कृति में विशेष तकनीक से तैयार किये गए विभिन्न प्रकार के शल्कों पर बने उपकरण मिलते हैं। इनमें मुस्टेरियन और लेवालोय (Levallois) तकनीके सामान्य थी। उच्च पुरापाषाण कालीन संस्कृति ब्लेड-उपकरण तकनीक पर आधारित है। इसके अलावा, आंध्र प्रदेश की कर्नूल गुफ़ाओं से हड्डियों से निर्मित औज़ार भी मिलते हैं। मध्य पाषाण कालीन संस्कृति 10000 बी.सी.ई. के आसपास शुरू हुई जिसे उत्तर प्रातिनूतन संस्कृति भी कहा जाता है। यह पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच की कड़ी है। सूक्ष्म उपकरण (Microliths) इसकी मुख्य विशेषता है जो सिलिका की सामग्री से विकसित तकनीक द्वारा बने लघु समग्र पाषाण औज़ार हैं।

2.12 शब्दावली

पुरातत्व विज्ञान : अतीत को समझने के लिए भौतिक अवशेषों का अध्ययन।

पुरावशेष (Artifact) : मनुष्य द्वारा निर्मित वस्तु, उपकरण आदि जिसका ऐतिहासिक/पुरातात्विक महत्व है।

जमावड़ा (Assemblage) : पुरातात्विक स्थलों के संदर्भ में एक संस्कृति या समयावधि से संबंधित पाए जाने वाले पुरावशेषों का संयोजन।

कार्बन 14 डेटिंग : इसे रेडियोकार्बन तिथि निर्धारण तकनीक भी कहते हैं। यह एक संपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें किसी पदार्थ के भीतर मौजूद रेडियोसक्रियता (Radioactivity) की जाँच की जाती है।

होमिनिड (Hominid) : मनुष्य के आधुनिक और प्राचीन रूपों का परिवार।

स्थल (Site) : एक ऐसा स्थान जहाँ अतीत में हुई मानव गतिविधियों का साक्ष्य हो।

स्तरीकरण (Stratigraphy): अतीत में किसी स्थल पर की गई प्राचीन सांस्कृतिक गतिविधियों की एक श्रृंखला। यह एक-दूसरे पर चढ़ी हुई सतहों/परतों के रूप में जानी जाती है।

ताप संदीप्ति काल-निर्धारण पद्धति : निरपेक्ष तिथि-निर्धारण विधि जो किसी पदार्थ, आमतौर पर गर्म किए गए मिट्टी के बर्तनों द्वारा उत्सर्जित ताप संदीप्ति (Thermoluminiscence) की मात्रा को मापती है।

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्राचीन पाषाण युग या पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण युग, नवीन पाषाण युग या नवपाषाण काल। देखें भाग 2.2 और 2.3।

2) सोहनियन और अशूलियन। विस्तार के लिए देखें भाग 2.7।

3) राजस्थान में दिदवाना और बुद्ध पुष्कर। विस्तार के लिए देखें भाग 2.8।

बोध प्रश्न - 2

1) आंध्र प्रदेश में रेनीगुंटा एवं कर्नूल। विस्तार के लिए देखें उपभाग 2.9.1।

2) सूक्ष्म उपकरण (Microliths) अर्द्धचन्द्राकार, समलंब चर्तुभुजाकार, त्रिकोणीय, मुलायम चाकूनुमा इत्यादि आकार के छोटे पत्थरों के उपकरण होते हैं जिनकी लंबाई तीन से. मी. से कम होती है। ये मुख्यतः मध्य पाषाणकालीन संस्कृति से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, ''उपकरणों के प्रकार एवं प्रौद्योगिकी'' शीर्षक के अंतर्गत देखें।

2.14 संदर्भ ग्रंथ

ऑल्चिन, बी. और ऑल्चिन, एफ़. आर. (1982). *द राइज़ ऑफ सिविलाइज़ेशन इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान.* केम्ब्रिजः केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मिश्रा, वी. एन. (1989). स्टोन एज इंडियाः एन इकोलौजिकल पर्‌सपैक्टिव. *मैन एण्ड इनवाइरनमेंट,* खंड 14, पृ. सं. 17-64।

पदैय्या, के. (1978) न्यू रिसर्च डिज़ाइन्स एंड फ़ील्ड टेकनीक्स इन द पैलियोलिथिक आर्कियोलॉजी ऑफ इंडिया. *वर्ल्ड आर्कियोलोजी.* खंड 10, पृ. सं. 94-110।

सांकलिया, एच. डी. (1964). *स्टोन एज टूल्सः देयर टेकनीक्स, नेम्स एंड प्रोबेबल फ़क्शन्स.* पुणेः डेक्कन कॉलेज।

सांकलिया, एच. डी. (1974) *प्रीहिस्ट्री एंड प्रोटोहिस्ट्री ऑफ़ इंडिया एंड पाकिस्तान.* पुणेः डेक्कन कॉलेज।